bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org

संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 सितम्बर द्वितीय– सेवा विशेषांक – 4

वर्तमान कमल ज्योति

वर्तमान

कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

नवरात्रि, विजया दशमी की हार्दिक शुभकामनायें

कमल ज्योति परिवार

सेवा और समर्पण का संकल्प दे रहा यूपी में विकास का संबल

15 अगस्त 1947 को भारत अंग्रेजों की दासता से मुक्त होकर 200 साल की गुलामी से आजाद हुआ तो अंग्रेज हमारे लिए गरीबी, भुखमरी और लाचारी छोड़कर गए थे। अपने पैरों पर खड़े होकर इस मुल्क ने धीरे–धीरे कदम बढ़ाए लेकिन 1947 से लेकर 1964 तक 17 साल बाद तक हालात कैसे थे, यह तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल से समझा जा सकता है। उनके एक साक्षात्कार में जब एक विदेशी पत्रकार सवाल करता है कि कि आप अब भी चिंतित हैं क्योंकि भारत को विदेश से आयात किए जाने वाले खाद्यान्न पर निर्भर रहना पड़ता है। यूट्यूब पर उपलब्ध इस इंटरव्यू को देखिए तो पत्रकार के सवाल से आप समझ सकेंगे कि देश कितनी परेशानियों से उस दौरान जूझ रहा था। भारत को गरीबी के पोस्टरबॉय की तरह देखा जाता था। लेकिन आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तब भारत ने विकास की उड़ान भर ली है। इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ का नारा देकर जो सपना देखा था वह आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में पूरा होते दिख रहा है। जी हां, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 8 साल के शासन के बाद देश को अच्छी खबर मिली है। विश्व बैंक ने कहा है कि भारत में अत्यंत गरीबों की संख्या घटी है। दरअसल, भारत के बारे में दुनिया में आम धारणा रही है कि प्राकृतिक संसाधनों से धनी, लेकिन गरीबों का देश है। अब यह धारणा बदल रही है।

सरकार सुशासन लाती है। यह सिद्ध हो रहा है। सरकार निर्बलों के लिये कार्य करती है। यह पहली बार विश्व को दिख रहा है। सरकार आप आदमी के लिये कार्य करती है यह देश मे पिछले आठ वर्षो से प्रतीत होने लगा है। जब सरकार और उसके मुखिया सेवा भावना से कार्य करते हैं तब उनके अनुसांगिक जनसमुह भी दुर्लभ दृष्टिकोण के साथ व्यवहार करता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार लगातार देश को मजबूत बनाने के लिये फैसले ले रही है तो सरकार के साथ–साथ संगठन भी देश को मजबूत बनाने मे संकल्पित हो गया है। इसका अप्रतिम उदाहरण है प्रधानमंत्री के जन्म दिन को सेवा भावना के साथ मनाने का भाजपा का अनूठा अभियान। भारतीय जनता पार्टी के अन्य कार्यकर्त्ताओं ने अपना रक्तदान करके देश के मेडिकल कालेजों और चिकित्सा संस्थानों को भारी राहत दी। करोड़ों की संख्या में स्वास्थय स्वयं सेवकों ने रक्त गट सूची बनाकर प्रस्तुत की और यह संकल्प लिया कि जब भी किसी को रक्त की आवश्यकता होगी भाजपा का कार्यकर्त्ता स्वेच्छा से अपना रक्तदान करेगा। विश्व की किसी भी पार्टी के अंदर इस तरह की सेवा भावना का उदाहरण नहीं मिलता है।

सम्पादकीय

2018 में प्रधानमंत्री ने कहा था कि आज कोई भी मां–बाप अपने बच्चों को विरासत में गरीबी नहीं देना चाहता है। हर मां–बाप चाहता है कि उनके नसीब में जैसी जिंदगी थी ठीक है, जैसे जीना पड़ा जी लिया, लेकिन बच्चों को ऐसी जिंदगी जीने के लिए मजबूर नहीं करेंगे। उसे अवसर चाहिए। गरीब ही गरीबी को परास्त कर सकता है। गरीब ही गरीबी के खिलाफ लड़ने वाली मेरी फौज का सबसे बड़ा सिपाही है। उसी को मैं ताकतवर बना रहा हूं। उसे घर मिलता है वो सम्मान से जीने लगता है। बिजली आती है तो वह बराबरी का अनुभव करता है। उसके बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ाई मिलती है वह विश्वास से खड़ा हो जाता है। घर में गैस का चूल्हा आ जाता है तो उसे लगता है कि पहले गाड़ी वाले घरों में गैस सिलेंडर हुआ करता था, आज मेरे घर में गैस का चूल्हा है। गरीब का बैंक में खाता खुल जाता है। यह जो विश्वास पैदा होता है, वही गरीबी को खत्म करता है। आज भाजपा सरकार ने ऐसी व्यवस्थाएं दी हैं ताकि गरीब ताकतवर बन जाए।

विश्व बैंक की रिपोर्ट भी यही कहती है। भारत में अत्यंत गरीबों की संख्या घटी है। साल 2011 से 2019 के बीच अत्यंत गरीबों की संख्या में 12.3 प्रतिशत की कमी आई है और इस मामले में शहरों के मुकाबले ग्रामीण क्षेत्रों का प्रदर्शन बेहतर रहा है। अर्थशास्त्री सुतीर्थ सिन्हा रॉय और रॉय वैन डेर वेइड ने यह दस्तावेज तैयार किया है। इससे पहले, अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष के एक दस्तावेज में कहा गया था कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना ने महामारी से प्रभावित 2020 में अति गरीबी को 0.8 प्रतिशत के निचले स्तर पर बरकरार रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यही करण है कि, 'ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की दर में कमी शहर के मुकाबले अधिक है।' नोटबंदी के दौरान शहरी गरीबी 2016 में दो प्रतिशत बढ़ी और उसके बाद उसमें तेजी से कमी आई। गांवों में गरीबी 2019 में 0.1 प्रतिशत बढ़ी जिसका कारण संभवतः आर्थिक वृद्धि में नरमी रही है। 2015–2019 के दौरान गरीबी में कमी पूर्व के अनुमान से कम होने का अनुमान है जो निजी अंतिम खपत व्यय में वृद्धि पर आधारित है। उनके विश्लेषण में खपत के मामले में असमानता बढ़ने का कोई सबूत नहीं पाया गया। छोटे जोत वाले किसानों की आय में वृद्धि अधिक हुई है। किसानों की वास्तविक आय सालाना आधार पर 10 प्रतिशत बढ़ी है।

सरकार और संगठन का का परोक्ष अभियान है कि उत्तर प्रदेश में अंत्योदय की भावना को निरंतर गति देकर प्रदेश को विकास किया जाये। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी अदित्यनाथ सरकार इसी भावना से काम्न कर रही है। गांवों में खेलों के विकास के साथ गरीबो की रसोई में अन्न भरने का कार्य प्रदेश की सरकार कर रही है। वहीं भाजपा के कार्यकर्त्ता स्वास्थ्य और रक्तदान शिविर आयोजित करने के साथ ही साथ गरीबों को राशन बांट रहें हैं। भाजपा की सभी जिला इकाइयों ने लोकहित वाले कार्यक्रम कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए ही आयोजित किए हैं। पार्टी कार्यकर्ताओं ने टीकाकरण अभियान को सुविधाजनक बनाने के लिए कोविड टीकाकरण शिविरों का आयोजन कराया है। भाजपा कार्यकर्ता महात्मा गांधी की जयंती यानी 2 अक्टूबर को बड़े पैमाने पर सफाई अभियान के साथ लोगों को खादी और स्थानीय उत्पादों के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करेंगे। इसयका सीधा अर्थ हे कि सरकारों के कार्यो को संगठन जन–जन तक लेकर जा रही है। यह भावना ही भाजपा को दूसरे दलों से अलग कर देती है। इसीलिये भाजपा को सभी का साथ सभी का विश्वास प्राप्त है।

akatri.t@gmail.com

'मां जैसा कोई नहीं'

उत्तर प्रदेश विधानमंडल का आज यानी दिन सदन में केवल और केवल महिलाओं के मुद्दों पर बात हुई और सदन में केवल महिला जनप्रतिनिधियों की ही आवाज सुनाई पड़ी। महिलाओं को समर्पित विधानसभा के सदन की शुरूआत प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महिला शक्ति पर वैदिक श्लोकों का जिक्र करते हुए महिलाओं की महानता पर तमाम बातें कहीं।

योगी आदित्यनाथ ने नारी शक्ति के ऊपर लिखी महर्षि वेदव्यास की पंक्तियों का जिक्र करते हुए कहा, 'नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः। नास्ति मातृसमं त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया।' इसके बाद सीएम योगी ने इन पंक्तियों का अर्थ भी सदन में बताया। सीएम योगी ने कहा, 'मां के समान कोई छाया नहीं है, मां के समान कोई सहारा भी नहीं है। मां के समान कोई रक्षक भी नहीं है और मां के समान कोई प्रिय चीज नहीं है।' सीएम ने कहा कि मुझे लगता है की मात्र शक्ति के प्रति ये भाव हर नागरिक के मन में आ जाए तो मुझे लगता है कुछ असंभव नहीं है।

महिलाओं के लिए सर्वाधिक योजनाएं –

सीएम योगी ने महिलाओं के लिए चलाई जारी योजनाओं का भी सदन में जिक्र किया। सीएम ने बोलते हुए कहा, प्रदेश में कुल 1584 थाने हैं, जिनमें महिला डेस्क हैं। 3195 एंटी रोमियो स्क्वॉड भी तैयार किए गए हैं। इसके अलावा, राज्य आजीविका मिशन में 66 लाख महिलाओं को जोड़ा गया है। प्रदेश में कन्या सुमंगला योजना की शुरुआत की गई, जिसके तहत 13 लाख 67 हजार बेटियों को लाभ मिल रहा है। वहीं, निराश्रित महिला पेंशन योजना के तहत 31 लाख 50 हजार महिलाओं की सरकार मदद कर रही है और मातृ वंदना योजना के अंतर्गत 1255129 माताएं लाभ उठा पा रही हैं।

योगी ने कई और योजनाओं के बारे में सदन के अंदर चर्चा की, जो सरकार की तरफ से महिलाओं के लिए चलाई जा रही हैं। इस दौरान सीएम योगी ने सभी महिला विधायकों से अपील की कि समस्याओं के बारे में खुलकर बोलें। अच्छे से चर्चा करें। उनके सुझाव नोट किए जाएंगे और सरकार उनको लेकर कदम उठाएगी। प्रदेश के विकास सम्मान और स्वावलंबन के बारे में महिलाओं के क्या विचार हैं, यह जानना जरूरी है। सभी मुद्दों पर महिलाएं सकारात्मक सुझाव दें, जिनसे सरकार को मदद मिलेगी और प्रदेश के लिए अच्छा काम हो सकेगा।

सीएम योगी के नेतृत्व में प्रदेश में कानून व्यवस्था की गवाही एनसीआरबी के आंकड़े भी दे रहे - भूपेन्द्र सिंह

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह ने विधानसभा सत्र शुरू होने से पहले सपा के हाई वोल्टेज ड्रामा पर तंज कसा है। उन्होंने सपा अध्यक्ष को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि एसी कमरे से कभी कभार बाहर निकलने वाले जमीनी हकीकत से दूर रहते हैं। जनहित के मुद्दों पर चर्चा करने की जगह सदन है सड़क नहीं, लेकिन सपा अध्यक्ष को अपने कार्यकाल के जंगलराज और भ्रष्टाचार अभी भी रह–रहकर याद आते हैं, जबकि सीएम योगी के नेतृत्व में प्रदेश में कानून व्यवस्था की गवाही एनसीआरबी के आंकड़े भी दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी जनता से कट चुकी है और सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए उसने सड़क पर हाईवोल्टेज ड्रामा किया है। भ्रष्टाचार के मामले में सपा सरकार ने सभी सीमाओं को पार कर दिया था, खनन और रिवर फ्रंट घोटाले सहित कई मामलों की जांच सीबीआई कर रही है।

सरकारी नौकरी और रोजगार देने के मामले में सीएम योगी के नेतृत्व में रिकार्ड कायम किया गया है, जबकि सपा सरकार में भर्तियों की स्थिति किसी से छिपी नहीं है। आज निष्पक्ष और पूरी पारदर्शिता से युवाओं को नौकरी और रोजगार मिल रहा है।

अब सपा की दाल गलने वाली नहीं – भाजपा प्रदेश अध्यक्ष

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि सपा का गुंडाराज आज भी लोगों के जेहन में है। अब सपा की दाल गलने वाली नहीं है। योगी सरकार बिना भेदभाव के समाज के सभी वर्गों के लिए काम कर रही है। ऐसा पहली बार हुआ है कि प्रदेश में पिछले करीब साढ़े पांच वर्षों में समाज के अंतिम पायदान पर खड़े हर व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के डबल इंजन की सरकार की योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

सेवा पखवाड़ा शुभारंभ

भारतीय जनता पार्टी द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर शनिवार को प्रदेशभर के 98 सांगठनिक जिलों में सेवा पखवाड़ा की शुरुआत हुई। पखवाड़ा के तहत पहले दिन पार्टी द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के जीवन के संघर्ष, व्यक्तित्व, कृतित्व तथा प्रशासनिक कार्यकुशलता पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

वहीं युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। राजधानी लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में नमो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह जी ने गोरखपुर के नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जिला अस्पताल में रक्तदान शिविर का शुभारम्भ किया तथा आजमगढ़ के अम्बेडकर पार्क में मोदी व्यक्तित्व प्रदर्शनी का उद्घाटन तथा आजमगढ़ के सदर अस्पताल में रक्तदान शिविर सम्मिलित होकर उत्साहवर्धन किया।

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मोती नगर उन्नाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जीवन पर आधारित मोदी व्यक्तित्व प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने लखनऊ के डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी चिकित्सालय में रक्तदान शिविर का उद्घाटन तथा नगर निगम परिसर में नमो प्रदर्शनी में सहभागिता की। पूरे प्रदेश में सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आज से प्रारंभ हुए कार्यक्रमों में केंद्र व राज्य सरकार के मंत्रीगण , जनप्रतिनिधियों, पार्टी पधाधिकारियो व कार्यकर्ताओं सम्मलित हुए।शनिवार से प्रारंभ हुआ सेवा पखवाड़ा महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर तक चलेगा।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर उनके दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए कहा कि हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी यूं ही हमारा नेतृत्व करते रहें। आजमगढ़ के नेहरू हॉल में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि भाजपा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस 17 सितम्बर से महात्मा गांधी जी की जयंती 2 अक्टूबर तक सेवा के विभिन्न कार्यक्रम करेगी। भाजपा के कार्यकर्ता जनता के बीच में रहते हैं, चुनाव लड़ाने के साथ ही जनता की सेवा का कार्य पूरे मनोयोग से करते हैं। कोरोना काल में हमारे कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की परवाह किए बगैर जनता की सेवा की।

उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार ने अपने संकल्प पत्र में जो वादा किया उसे पूरा किया। देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न बनाना हमारे संकल्प पत्र में था। अनुच्छेद 370 हटाना हमारे संकल्प पत्र में था। पारदर्शी बिजली वितरण की व्यवस्था, पूरे देश को शुद्ध पेय जल उपलब्ध कराना, उत्तर प्रदेश में कानून का राज स्थापित करना, गुंडे माफियाओं, भ्रष्टाचारियों पर कार्यवाही करना, माताओं–बहनों की सुरक्षा का संकल्प, यह सब हमारे संकल्प पत्र में था हमारी सरकार ने यह सब वादे पूरे करने का कार्य किया। भाजपा आगामी नगर निगम, नगर पालिका और नगर पंचायत के सभी सीटों पर जीतने के संकल्प के साथ चुनाव लड़ेगी।

पार्टी कार्ययोजना के साथ एक–एक कार्यकर्ता को साथ लेकर सभी चुनाव जीतेगी। आगामी लोकसभा चुनाव में पार्टी उत्तर प्रदेश की 80 में से 80 सीटे जीतेगी। भाजपा कार्यकर्ताओं की पार्टी है। अन्य दलों में पद का आरक्षण परिवार के लिए होता है, भाजपा ही एक मात्र दल है जहां आरक्षण कार्यकर्ताओं के लिए सुरक्षित है। आजमगढ़ के लिए कहा जाता था आजमगढ़ भाजपा के लिए बंजर भूमि है, लेकिन लोकसभा उपचुनाव में आजमगढ़ की जनता ने दिनेश लाल यादव निरहुआ को सांसद बनाकर शुरूवात कर दी है अब आजमगढ़ भाजपागढ़ के रूप में जाना जाएगा।

प्रदेश महामंत्री अनूप गुप्ता ने बताया की शनिवार से प्रारंभ हुआ सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत पूरे प्रदेश में कार्यक्रम आयोजित किए गए। केन्द्र सरकार के मंत्री ज0वी0के0 सिंह ने गाजियाबाद महानगर, साध्वी निरंजन ज्योति ने फतेहपुर भानु प्रताप वर्मा ने जालौन, पंकज चौधरी ने महराजगंज, प्रदेश सरकार के मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने लखनऊ जिला, स्वतंत्र देव सिंह ने अयोध्या महानगर, लक्ष्मीनारायण चौधरी ने मथुरा महानगर, धर्मपाल सिंह ने आंवला, अनिल राजभर ने वाराणसी जिला, नंदगोपाल गुप्ता नन्दी ने प्रयागराज महानगर, जितिन प्रसाद ने सीतापुर, राकेश सचान ने कानपुर देहात, नितिन अग्रवाल ने रायबरेली तथा प्रदेश सह प्रभारी सुनील ओझा ने वाराणसी महानगर में रक्तदान शिविर व नमो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इसके साथ ही पार्टी के प्रदेश, क्षेत्र, जिला, मण्डल व बूथ के पदाधिकारी, प्रदेश सरकार के मंत्री, सांसद, विधायक, महापौर, नगरपालिका अध्यक्ष, नगर पंचायत अध्यक्ष, आयोग निगम बोर्ड के अध्यक्ष व सदस्य व पार्टी कार्यकर्ता जन सरोकार के कार्यो से जुड़ते हुए सेवा पखवाड़ा के तहत आयोजित कार्यक्रमों में उत्साह पूर्वक सम्मिलित हुए।

रविवार को सेवा पखवाड़ा के तहत प्रदेश के सभी सीएचसी केन्द्रों पर निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किए गए जिनमें पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता रोगियों को परीक्षण शिविर तक पहुंचाने तथा सेवा करने का कार्य किया।

सेवा-समर्पण के सात बरस

गरीब कल्याण और सेवा-सुशासन ही मूल मंत्र

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के कामकाज का विश्लेषण करते समय बहुत सारे देश एवं विदेशों के विचारक कहते हैं कि उनके काम काज का मूल मंत्र गरीब कल्याण है। भाजपा इसे ही पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी के "अंत्योदय की परिकल्पना को साकार करना मानती है"। पिछले 8 साल से केंद्रीय योजना और उसके पहले के लगभग 13 साल गुजरात सरकार की योजना में जब हम देखते हैं तो पाते हैं कि, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में इसकी परिकल्पना केंद्र में रखकर ही बनाई गई है।

प्रधनमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने कामकाज में हमेशा से गरीब कल्याण को सर्वोपरि रखा है। इसी कड़ी में हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जनकल्याण के कामकाज जिसमें कोरोना काल में गरीब कल्याण अन्न योजना सबसे महत्वपूर्ण है जिसके तहत 80 करोड़ देशवासियों को मुफ्त में खाद्यान्न दिया जा रहा है को पाते है। विश्व इतिहास को टटोले तो लगभग 100 साल पहले स्पेनिश फ्लू के कारण देश में फ्लू से अधिक भुखमरी के कारण मौत हुई थी लेकिन इस बार कोरोना के दौरान ऐसी स्थिति ना हो इसके लिए नरेंद्र मोदी सरकार ने महामारी के शुरुआत से इस साल के अंत तक लगभग 80 करोड़ जनता को लिए प्रतिमाह 5 किलो अन्न दिया। इसी का परिणाम हम महामारी के दौरान भुखमरी न होने में देख सकते हैं।

अरुण कान्त त्रिपाठी

प्रधानमंत्री के कार्य करने का असली ध्येय रहता हैं कि, वे लोगों की समस्याओं का समग्र तौर पर निवारण करते हैं। लोगों के स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता अभियान खेलो इंडिया अभियान योग को बढ़ावा आयुष्मान योजना पोषण योजना आदि की शुरुआत इसी ध्येय यात्रा का कुछ पोषक तत्व हैं। इसके साथ ही साथ देश के मेडिकल कॉलेजों में पीजी और यूजी सीट की संख्या में बढ़ोतरी भी की गई। देश में कांग्रेस सरकारों के समय पहले कुछ लक्षित संख्या में लोगों की समस्याओं का समाधान किया जाता था लेकिन अब नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में समस्या का समग्र समाधान किया जा रहा है। इस दृष्टिकोण को समझना है तो लोगों के आवास पीने के स्वच्छ पानी शौचालय बैंक अकाउंट आदि की व्यवस्था सभी के लिए कि ना कि कुछ लक्ष्य संख्या के लोगों के लिए किया गया है। जिसको मसग्र तरीके से देखने की जरूरत है।

प्रधानमंत्री ने इस तरह से देश में सबका साथ सबका विकास की राह पर चलते हुये सुशासन का राज कायम किया है। पीएम नरेंद्र मोदी के प्रयासों कामकाज और छवि के कारण ही 2012 के दौरान जब बहुदलीय व्यवस्था पर लोगों का विश्वास उठ गया था उस पर लोगों का भरोसा कायम हुआ। पीएम नरेंद्र मोदी ने भ्रष्टाचार को खत्म करके सुशासन और पारदर्शिता के साथ–साथ जवाबदेह सरकार की परिकल्पना की जिसके कारण उन्हें जनसमर्थन प्राप्त हुआ। इसी कारण पीएम नरेंद्र मोदी मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री रहते हुए कोई भी चुनाव नहीं हारे बल्कि उनके नेतृत्व में लगातार प्रदेश और देश में सरकार बनी। समग्र तरीके से अगर इस सेवा भावना और देश के गरीब लोगों के साथ प्रधानमंत्री के कनेक्शन को देखें तो हम पाते हैं कि सात दशक में नरेन्द्र मोदी सरकार ने पहली बार 26 मई, 2014 को शपथ ली थी और दूसरी बार 30 मई, 2019 को। देश में किसी प्रधानमंत्री के दोनों शपथ ग्रहण समारोहों को अनूठा बनाने का प्रयास किया गया। पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था कि शपथ ग्रहण के अवसर को क्षेत्रीय एकजुटता का संदेश देते हुए ग्लोबल एप्रोच वाला समारोह बनाया गया हो।

वर्ष 2019 के आम चुनाव में भारत के लोगों ने भारतीय जनता पार्टी को और ताक़तवर बनाकर संसद भेजा। 30 मई, 2019 को प्रधानमंत्री के तौर पर मोदी के शपथ ग्रहण

समारोह में बे ऑफ़ बंगाल इनीशिएटिव फ़ॉर मल्टी सेक्टरल टैक्निकल एंड इकनॉमिक को–ऑपरेशन यानी बिम्सटेक देशों के भारत के अलावा बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, म्यांमार और थाइलैंड शामिल हैं के साथ शपथ ग्रहण जैसे औपचारिक समारोह को कूटनैतिक संबंध बनाने, बढ़ाने के अवसर में बदलने की अभिनव सोच ज़ाहिर है कि स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन में ही पनपी होगी। ऐसी कोई परंपरा होती, तो 2014 से पहले हुए शपथ ग्रहण समारोहों में भी इस तरह की पहल की गई होती। यही उनका विश्वास उनको लगातार देश के लोगों के साथ उनको कनेक्ट करता है।

उनकी सरकार की उपलब्धियों में आमतौर पर किसी सरकार के महत्वपूर्ण फ़ैसलों का ज़िक्र प्रमुखता से किया जाता है, हम भी इस टिप्पणी में आगे उनका ज़िक्र करेंगे, लेकिन यह देखना भी बहुत महत्वपूर्ण होता है कि कोई नेता अपनी प्रतिबद्धताओं की पूर्ति के लिए किस तरह दूसरों से अलग होने की सहजता का प्रदर्शन अपने स्वाभाविक हाव–भाव के माध्यम से करता है। जहां तक प्रधानमंत्री के तौर पर सात उपलब्धियों के बखान का प्रश्न है, तो कृतित्व के साथ ही उनके व्यक्तित्व पर भी थोड़ा ही सही, दृष्टिपात आवश्यक है। पार्टी की तरफ़ से ज़िम्मेदारी मिलने, जीतने और उसके बाद पद संभालने और अपनी सोच के क्रियान्वयन की प्रतिबद्धता का संकल्प मन में लिए आगे बढ़ने की पूरी प्रक्रिया में जब हम किसी व्यक्ति को संसद की सीढ़ियों पर विनम्रता से माथा टिकाते देखते हैं, तो समझ में आता है कि दूसरों की अपेक्षा वह बहुत अलग है।

यह ठीक है कि हर सरकार अपनी सोच और कार्यपालिका पर अपनी पकड़ के अनुसार देश हित में निर्णय लेती है। हर प्रधानमंत्री और उसकी कैबिनेट का विज़न अलग होता है, लेकिन उद्देश्य एक ही होता है, देश को विकास की राह पर आगे बढ़ाने और देशवासियों को समृद्धि की ओर ले जाने का। इन दो व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति योजनाएं बनाकर उनके अधिक से अधिक क्रियान्वयन के माध्यम से की जाती है। मोदी के आठ साल के कार्यकाल में सबसे बड़ी उपलब्धि तो यही है कि इससे पहले 'भ्रष्टाचार' नाम का जो शब्द हर भारतीय की ज़ुबान पर रहता था, वह अब कम ही सुनने को मिलता है।

दूसरे कार्यकाल के क़रीब सात महीने बाद ही कोविड–19 ने पूरी दुनिया को अपनी जानलेवा चपेट में ले लिया। साफ़ है कि दिसंबर, 2019 के बाद से तो दुनिया की सारी सरकारें कोरोना से निपटने के प्रयासों में लगी दिखाई दे रही हैं। इस दौरान तो सभी देशों की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि कैसे मरने वालों के आंकड़े पर काबू पाया जा सके। नरेन्द्र मोदी सरकार भी इसी संकट से जूझ रही है। इस भयावह दौर में कोरोनारोधी स्वदेशी टीका शेष विश्व के क़रीब–क़रीब साथ ही विकसित होना भारत की बड़ी उपलब्धि कही जाएगी। अब तो करीब पांच से अधिक टीके भारत ने बनाकर प्रस्तुत कर लिया है। इसका श्रेय मोदी सरकार को देना ही पड़ेगा।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने कोरोना काल में 80 करोड़ से अधिक देशवासियों को मुफ्त राशन की व्यवस्था करके दुनिया के सामने एक उदाहरण पेश किया है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत पिछले 25 महीनों में 6 चरणों के अंतर्गत 1,000 लाख मीट्रिक टन अनाज बांटे गए हैं। अप्रैल 2020 से लेकर सितंबर 2022 तक इस योजना पर 3.40 लाख करोड़ रुपये खर्च आने का अनुमान है। इस शताब्दी के सबसे बड़े संकट कोरोना महामारी के बावजूद भारत एक ऐसा देश बनकर उभरा जिसमें एक भी गरीब परिवार के घर में चूल्हा न जला हो, ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं हुई। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण

अन्न योजना के अंतर्गत 80 करोड़ देशवासियों को प्रति माह पांच किलो अनाज मुफ्त देने का काम प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में किया गया। इसके साथ ही वन नेशन– वन राशन कार्ड के कारण लगभग 65 करोड़ पोर्टेबिलिटी ट्रांसेक्शन से लोगों ने अपने अन्न को अपने घर की जगह कहीं और से लिया है।

जन–कल्याण की बहुत सी योजनाओं का ख़ाका मोदी सरकार ने खींचा और उन पर ईमानदारी से अमल के प्रयास भी किए। आज़ादी के सात दशक बाद आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों के लिए जनधन खाते बैंकों में पहली बार खोले गए। आयुष्मान योजना से ग़रीबों का पांच लाख रुपये तक मुफ़्त इलाज़ निजी क्षेत्र के अस्पतालों में संभव हुआ, तो उज्ज्वला योजना के तहत मुफ़्त एलपीजी कनेक्शन से करोड़ों विपन्न परिवारों को रसोई में धुएं और घुटन से मुक्ति मिली। सबके घर बिजली की सौभाग्य योजना हो, या सबको पक्के प्रधानमंत्री आवास, आम देश वासी से गौरव और आत्म सम्मान का ध्यान मोदी सरकार ने रखने की कोशिश की। अटल पैंशन योजना समेत और भी बहुत सी योजनाओं के नाम गिनाए जा सकते हैं, जिनके ज़रिए मोदी सरकार ने कमज़ोर तबक़े को शक्तिशाली बनाने का काम किया है। इन योजनाओं की समीक्षा समय–समय पर किए जाने की ज़रूरत है, ताकि मोदी विरोधियों के सामने वस्तुस्थिति चरणबद्ध रूप से रखी जा सके।

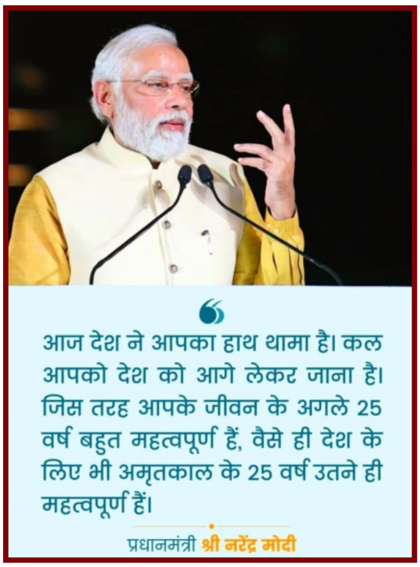

वोकल फ़ॉर लोकल जैसे सूत्रों के साथ मोदी सरकार ने आत्मनिर्भरता का मूल मंत्र आम भारतीय की चेतना में फूंका है, तो ऐसा पहली बार ही किया गया है। आज़ादी के समय महात्मा गांधी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने के प्रबल पक्षधर थे, लेकिन किन्हीं कारणों से प्राथमिकताएं बदल गईं और आज़ादी का असल लक्ष्य अभी तक हासिल नहीं हो पाया। किसानों की हालत बद से बदतर होती गई। कर्ज में डूबे लाखों किसानों को आत्महत्या करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

अब उन कुछ बड़े फ़ैसलों का ज़िक्र कर लेते हैं, जो मोदी हैं, तभी मुमकिन हुए हैं। एक बार में तीन तलाक़ बोलकर मुस्लिम महिलाओं को प्रताड़ित करने के ख़िलाफ़ क़ानून बनाने की हिम्मत मोदी सरकार ने ही की है। हालांकि इसके लिए सरकार को सुप्रीम कोर्ट की ओर से समर्थन मिला था। फिर भी सरकार की इच्छाशक्ति थी, इसलिए ही क़ानून बना और मुस्लिम महिलाओं ने इसके लिए बहुत से अवसरों पर मोदी सरकार को धन्यवाद भी दिया।

प्रधनमंत्री के सबका साथ सबका विकास और उनकी सेवा भावना का एक अप्रतिम उदाहरण है देश के विपन्न सवर्णो को बाक़ायदा क़ानून बनाकर सरकारी नौकरियों में 10 प्रतिशत आरक्षण देना। यह क्रांतिकारी निर्णय ही कहा जाएगा। राजनैतिक बाड़ेबंदी इस तरह हुई कि विपक्ष भी सरकार के इस फ़ैसले की आलोचना नहीं कर पाई। नोटबंदी के बिना सरकार की उपलब्धियों का ज़िक्र अधूरा रह जाएगा। इसी तरह एक देश–एक टैक्स की दिशा में जीएसटी क़ानून बनाना मोदी सरकार की बड़ी उपलब्धि है। ऐसे में भारतीय जनता पार्टी का मानना है कि कोविड–19 की परिस्थितियों के क़ाबू में आने के बाद भारत नई शक्ति, नई ऊर्जा के साथ शेष विश्व के साथ क़दमताल में अग्रणी दिखाई देगा। इसमें अधिसंख्य भारतीयों को कोई संदेह नहीं है। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जे पी नड्डा कहते भी हैं कि –हम साधक, वे बाधक। यानी सरकार साधक और विपक्ष बाधक।

साल 2014 से अब तक प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में देश में कुछ ऐसी योजनाओं को अमली जामा पहनाया जा रहा है जिसे कभी कांग्रेस पार्टी खुद करने का सपना देखती थी। लेकिन वह अपने दशकों के शासन काल में हिम्मत नहीं कर सकी। 2014 में बीजेपी को भारी संख्या में वोट देकर सत्ता में लाने वाले भी नहीं जानते थे कि मोदी सरकार गरीबों की सरकार बन जाएगी।

देश के बजट में स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाले खर्च का रेशियो बढ़ाना भी एक बहुत बड़ा कदम रहा है। पीएम आवास योजना, छोटे किसानों को हर साल 6000 रुपए तीन किस्तों में दिए जा रहे हैं। जिससे उन्हें खेती करने में आसानी होती है. कई तरह की पेंशन योजनाओं को भी लागू किया, जिससे निम्न वर्ग के लोगों को काफी राहत मिली। इसमें प्रधानमंत्री पेंशन योजना अटल पेंशन योजना जैसे स्कीम शामिल हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले आठ सालों में जनाकांक्षाओं पर खरा उतरने और विकास को सर्वस्पर्शी बनाने के साथ ही देश के सामने सुशासन की एक नई मिसाल पेश की है। उन्होंने सुशासन को राजनीति का केंद्रबिन्दु बनाया है, जो उनकी बड़ी उपलब्धि है। लोकसभा चुनाव जीतने के बाद 20 मई, 2014 को संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में नरेन्द्र मोदी को संसदीय दल का नेता चुना गया था। इसके बाद उन्होंने अपने संबोधन में कहा था, "सरकार वह हो जो गरीबों के लिए सोचे, सरकार गरीबों को सुने, गरीबों के लिए जिए, इसलिए नई सरकार देश के गरीबों को समर्पित है। देश के युवाओं, मां–बहनों को समर्पित है। यह सरकार गरीब, शोषित, वंचितों के लिए है। उनकी आशाएं पूरी हो, यही हमारा प्रयास रहेगा।" सरकार लगातार इसी दिशा में आगे बढ़ रही है।

संकल्प से सिद्धि का संदेश

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कार्य शैली विलक्षण है। राष्ट्र और समाज की सेवा में सम्पूर्ण समर्पण। इसी के अनुरूप परिवार भावना का विस्तार। एक बार उनकी माँ ने कहा था कि हमारे परिवार ने नरेन्द्र मोदी को समाज के लिए समर्पित मान लिया था। ना परिवार ने कभी उनसे कोई अपेक्षा की, ना नरेन्द्र मोदी ने अपने को सीमित दायरे में रखा।मुख्यमन्त्री रहे तो पूरे गुजरात को अपना परिवार माना। वह के छह करोड़ लोगों को अपना परिवार मानते रहे, उन्हीं के हित में कार्य करते रहे। प्रधानमंत्री बने तो सवा सौ करोड़ लोगों तक उनका परिवार विस्तृत हो गया। आठ वर्षों तक बिना विश्राम के इस परिवार के सेवा में समर्पित है। यह कार्यशैली और चिंतन ही उनको विशिष्ट बनाता है। बिल्कुल अलग। उनकी यह कार्य शैली योगी आदित्यनाथ में परिलक्षित होती है। वह भी पूरे उत्तर प्रदेश को अपना परिवार मानते हुए समर्पित भाव से शासन कर रहे हैं। उन्होंने सन्यास आश्रम ग्रहण करने के साथ ही अपने परिवार का परित्याग कर दिया था। मनसा वाचा कर्माणा सन्यास समाज और राजधर्म का निर्वाह कर रहे हैं। नरेन्द्र मोदी और योगी आदित्यनाथ के लिए जन्म दिवस और पर्व आदि भी समाज सेवा के अवसर होते हैं। उनके ये आयोजन भी व्यक्तिगत नहीं होते।

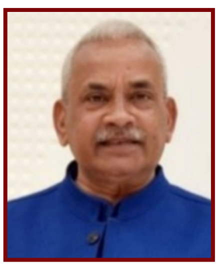

डा0 दिलीप अग्निहोत्री

अमित शाह ने ठीक कहा कि नरेन्द्र मोदी ने भारत प्रथम के विचार व गरीब कल्याण के संकल्प से असंभव कार्यों को संभव करके दिखाया है। गरीब कल्याण,सुशासन, विकास,राष्ट्र सुरक्षा व ऐतिहासिक सुधारों के समांतर समन्वय से नरेन्द्र मोदी ने माँ भारती को पुनः सर्वोच्च स्थान पर आसीन करने के अपने संकल्प को धरातल पर चरितार्थ किया है। यह निर्णायक नेतृत्व और उस नेतृत्व में जनता के अटूट विश्वास के कारण ही सम्भव हो पाया है। एक सुरक्षित, सशक्त व आत्मनिर्भर नए भारत के निर्माता मोदी का जीवन सेवा और समर्पण का प्रतीक है। आजादी के बाद पहली बार करोड़ों गरीबों को उनका अधिकार देकर उनमें आशा और विश्वास का भाव जगाया है। भारतीय संस्कृति के संवाहक नरेन्द्र मोदी ने देश को अपनी मूल जड़ों से जोड़ हर क्षेत्र में आगे ले जाने का काम किया है। उनकी दूरदर्शिता व नेतृत्व में नया भारत एक विश्वशक्ति बनकर उभरा है। वैश्विक नेता के रूप में उनकी विशेष पहचान और छवि है। वह दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं। उनके जन्मदिन से लेकर गांधी जयन्ती तक भाजपा सेवा पखवाड़ा मना रही है। इसके अंतर्गत देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।नरेन्द्र मोदी ने हमेशा की तरह इस बार भी अपना जन्मदिन राष्ट्र सेवा के कार्यों में बिताया। आजादी के कुछ समय बाद ही देश चिता मुख्त हो गया था। नरेन्द्र मोदी ने भारत में विलुप्त हो चुके जंगली चीतों को कुनो नेशनल पार्क में छोड़ा। पचहत्तर वर्ष बाद आठ चीते देश की धरती पर लौट आए हैं। मोदी ने कहा कि अफ्रीका से हमारे मेहमान आए हैं।

इनको नामीबिया से लाया गया है। अब ये कूनो राष्ट्रीय उद्यान के क्वारंटाइन बाड़े में रहेंगे।

यहां प्रधानमंत्री के लिए दस फिट ऊंचा प्लेटफॉर्म नुमा मंच बनाया गया था। इसी मंच के नीचे पिंजरे में चीते थे। प्रधानमंत्री ने लीवर के जरिए बॉक्स को खोला और चीतों को कूनो राष्ट्रीय

उद्यान में विमुक्त किया। कैमरा लेकर उनकी तस्वीर भी ली। इसके साथ ही देश में सात दशक बाद फिर से चीता युग की भी शुरुआत हो गई। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मप्र के लिए इससे बड़ा कोई तोहफा नहीं है।

देश में चीते विलुप्त हो गए थे। इन्हें फिर से बसाना एक ऐतिहासिक कदम है। यह इस सदी की सबसे बड़ी वन्यजीव घटना है। इससे मध्य प्रदेश में पर्यटन को तेजी से बढ़ावा मिलेगा। आजादी के समय देश में केवल तीन चीते बचे थे।छत्तीसगढ़ में कोरिया के राजा ने इन तीनों का शिकार किया था। इसके बाद देश को चीतों को विलुप्त तो घोषित कर दिया था। लेकिन उनके पुनर्वास के लिए दशकों तक सार्थक प्रयास नहीं किए गए। आजादी के अमृत काल में अब देश नई ऊर्जा के साथ चीतों के पुनर्वास के लिए जुट गया है। अंतरराष्ट्रीय गाइडलाइन्स पर चलते हुए भारत इन चीतों को बसाने का प्रयास कर रहा है। मोदी ने कहा कि प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण हमारा भविष्य भी सुरक्षित होता है। विकास और समृद्धि के रास्ते भी खुलते हैं। कुनो नेशनल पार्क में जब चीता के विचरण से चरागाह पारिस्थितिकी तंत्र फिर से बहाल होगा तथा जैव विविधता और बढ़ेगी। यहाँ एशियाई शेरों की संख्या भी बढ़ी है। गुजरात देश में एशियाई शेरों का बड़ा क्षेत्र बनकर उभरा है। इसके पीछे दशकों की मेहनत,अनुसंधान नीतियां जन भागीदारी की बड़ी भूमिका है। बाघों की संख्या को दोगुना करने का लक्ष्य समय से पहले पूरा हो गया है।असम में एक समय एक सींग वाले गैंडों का अस्तित्व खतरे में पड़ने लगा था,लेकिन आज उनकी भी संख्या में वृद्धि हुई है। हाथियों की संख्या भी पिछले वर्षों में बढ़कर तीस हजार से ज्यादा हो गई है। देश में पचहत्तर वेटलेंड्स को रामसर साइट्स के रूप में घोषित किया गया है, जिनमें छब्बीस साइट्स पिछले चार वर्षों में ही जोड़ी गई हैं। मोदी ने कहा कि अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी उम विरोधाभाष नहीं है। देश की प्रगति में इन सभी का योगदान और महत्त्व होता है।पर्यावरण की रक्षा से देश की प्रगति हो सकती है, ये भारत ने दुनिया को करके दिखाया है। प्रकृति पर्यावरण,पशु पक्षी भारत के लिए ये केवल स्थिरता सुरक्षा के विषय नहीं हैं।

यह हमारी संवेदनशीलता और आध्यात्मिकता का भी आधार हैं। इसके अलावा नरेन्द्र मोदी अपने जन्मदिन पर मध्य प्रदेश के श्योपुर में स्वयं सहायता समूह सम्मेलन में भी सहभागी हुए। उन्होंने कहा कि आमतौर पर वह अपने जन्मदिन पर मां से मिलते हैं।उनका आशीर्वाद लेते हैं। आज मैं उनके पास नहीं जा सका, लेकिन आदिवासी क्षेत्रों और गांवों में कड़ी मेहनत करने वाली लाखों माताएं आज यहां मुझे आशीर्वाद दे रही हैं। यह दृष्य देखकर मेरी मां को संतोष होगा कि भले बेटा आज यहां नहीं आया, लेकिन लाखों माताओं ने आशीर्वाद दिया है। नए भारत में पंचायत भवन से लेकर राष्ट्रपति भवन तक नारीशक्ति का परचम लहरा रही हैं। विगत आठ वर्षों के दौरान देश में ग्यारह करोड़ से ज्यादा शौचालय बनाय गए। नौ करोड से ज्यादा उज्जवला के गैस कनेक्शन प्रदान किए गए। करोड़ों परिवारों में नल से जल की सुविधा उपलब्ध करायी गई। महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण हो रहा है।

पिछले आठ सालों में स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाने की दिशा में अनेक कदम उठाए गए। आठ करोड़ से अधिक महिलाएं इस अभियान से जुड़ी हैं। सरकार का लक्ष्य हर ग्रामीण परिवार से कम से कम एक महिला को इस अभियान से जोड़ने का है। गांव की अर्थव्यवस्था में, महिला उद्यमियों को आगे बढ़ाने के लिए सरकार निरंतर काम कर रही है। एक जिला एक उत्पाद के माध्यम से हम हर जिले के लोकल उत्पादों को बड़े बाजारों तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर लखनऊ में योगी आदित्यनाथ ने छायाचित्र प्रदर्शनी 'कहानी भारत मां के सच्चे सपूत की का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में नरेन्द्र मोदी की जीवन यात्रा को प्रदर्शित किया गया है। इसमें गुजरात के मुख्यमंत्री तथा भारत के प्रधानमंत्री के रूप में उनके द्वारा किये गये कार्यों को दर्शाया गया है।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि नरेन्द्र मोदी महापुरूषों द्वारा देखे गए सपनों को साकार कर रहे है। विगत आठ वर्षों में अनेक योजनाओं के माध्यम से भारत को विकसित बनाने का कार्य चल रहा है। ब्रिटेन को पछाड़ कर भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था व्यवस्था वाला देश बन गया है।

पूर्ण विजय संकल्प

भारतीय जनता पार्टी आगामी शिक्षक व स्नातक विधान परिषद चुनाव के लिए प्रदेश मुख्यालय पर बैठक में विजय की रणनीति तय की। विधान परिषद चुनाव के प्रदेश संयोजक, सह संयोजक व क्षेत्रीय संयोजक, निर्वाचन क्षेत्रों के तय किये गए संयोजक व सह संयोजक तथा प्रदेश सरकार के मंत्रियों ने बैठक में मंत्रणा की।

प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि भाजपा विधान परिषद शिक्षक व स्नातक क्षेत्र की पांचों सीटों को बड़े अंतर से जीतने के संकल्प के साथ चुनाव में उतरेगी। उन्होंने कहा कि नए मतदाता बनवाने तथा मतदाताओं से सतत् सम्पर्क व संवाद करते हुए चुनाव के दिन मतदान स्थल तक मतदाता को पहुंचाने से लेकर मतगणना तक पार्टी के प्रत्येक नेता, पदाधिकारी व कार्यकर्ता की जिम्मेंदारी तय करना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में जन–जन की आत्मनिर्भरता से आत्मनिर्भर राष्ट्र के संकल्प के साथ बड़ी संख्या में लोग पार्टी से जुड़ रहे है। हमें विधान परिषद स्नातक निर्वाचन क्षेत्र में प्रत्येक स्नातक तथा शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र में प्रत्येक शिक्षक को मतदाता बनाना है।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने कहा कि आगामी 1 अक्टूबर से विधान परिषद की पांचों सीटों में मतदाता बनाने का काम प्रारम्भ होगा। उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें अपने परिवार, मित्रों तथा परिचित परिवारों में जाकर अपेक्षित श्रेणी के मतदाता बनाने का काम सुनिश्चित करना है।

विधान परिषद के चुनाव में भी बूथ से लेकर प्रदेश स्तर के सभी कार्यकर्ता अपने–अपने क्षेत्रों में मतदाता बनाने के साथ चुनाव की अन्य जिम्मेदारियों से जुड़ेगें। केन्द्र सरकार व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के साथ ही भाजपा की विचारधारा लेकर प्रत्येक मतदाता की दहलीज पर दस्तक देने का काम करेगें। उन्होंने कहा कि पूर्ण विजय के संकल्प के साथ प्रत्येक कार्यकर्ता विधान परिषद चुनाव जीतने के लिए जुटेंगे। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा 1 अक्टूबर से प्रारम्भ किये जा रहे स्नातक/शिक्षक मतदाता बनाने के कार्यक्रम में भाजपा की प्राथमिक इकाई तक मतदाता बनाने की कार्ययोजना पर प्राथमिकता से काम करेगी।

इसके साथ ही प्रदेश महामंत्री अमरपाल मौर्य को विधान परिषद चुनाव का प्रदेश संयोजक तथा प्रदेश मंत्री संजय राय, एमएलसी श्रीचन्द्र शर्मा व अजय सिंह को सह संयोजक की जिम्मेदारी सौपी गई।

शिक्षक व स्नातक विधान परिषद चुनाव

भारतीय जनता पार्टी विधान परिषद चुनाव की तैयारियों के तहत बरेली–मुरादाबाद स्नातक निर्वाचन क्षेत्र की मुरादाबाद कमिश्नरी की बैठक 27 सितम्बर व बरेली कमिश्नरी की बैठक 28 सितम्बर को होगी। वहीं गोरखपुर–फैजाबाद स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के तहत अयोध्या कश्मिनरी की बैठक 29 सितम्बर व गोरखपुर कमिश्नरी की बैठक 30 सितम्बर को होगी। जबकि इलाहाबाद–झांसी निर्वाचन क्षेत्र की प्रयागराज कमिश्नरी की बैठक 28 सितम्बर, बांदा की बैठक 29 व झांसी की बैठक 30 सितम्बर एवं कानपुर शिक्षक/स्नातक निर्वाचन की संयुक्त बैठक दिनांक 27 सितम्बर को निश्चित की गई है।

विधान परिषद की शिक्षक व स्नातक निर्वाचन की तैयारी बैठक में प्रदेश सरकार के मंत्री सूर्यप्रताप शाही, योगेन्द्र उपाध्याय, कपिल देव अग्रवाल, श्रीमती गुलाब देवी, दयाशंकर मिश्र 'दयालु', दानिश आजाद अंसारी पांचों निर्वाचन क्षेत्र के क्षेत्रीय संयोजक, स्नातक एमएलसी अरूण पाठक, जयपाल सिंह व्यस्त, देवेन्द्र प्रताप सिंह व हरि सिंह ढिल्लो उपस्थित रहे।

महिला कल्याण से लोक कल्याण को समर्पित मोदी सरकार ....

भारतीय संविधान में महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिये गए हैं और उन्हें पुरुषों के समान दर्जा मिला है लेकिन 2014 से पहले वास्तविक जिंदगी और आंकड़े कुछ अलग कहानी बयान करते थे। लेकिन पिछले आठ साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कल्याणकारी योजनाओं ने महिलाओं के जीवन में उत्तरोत्तर प्रगति लाने का कार्य किया है जो कि उनकी दूरगामी सोच की परिणीति है । मोदी सरकार ने महिला सशक्तिकरण के लिए ठोस व धरातल पर काम किया है। इसी का परिणाम है कि आज महिलाएं फाइटर विमान की उड़ान भर रही हैं, ट्रेन चला रही हैं, सेना में अहम पदों पर तैनात की जा रही है। ऐसे क्षेत्रों में जहां पूर्व में महिलाओं को दूर रखा गया था उन क्षेत्रों में महिलाओं को प्राथमिकता के साथ शामिल होने व आगे बढ़ने का समुचित अवसर दिया गया है।

भारत एक विशाल देश है इसमें अलग–अलग क्षेत्रों में अलग समाज में महिलाओं की स्थिति बदल जाती है। देश में विकसित मैट्रो सिटीज में महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा का अहसास तो हो रहा है तो वही दूरदराज के अपेक्षाकृत कम विकसित क्षेत्रों मे महिलाएं नहीं के बराबर महसूस कर रही थी पर आज 2014 के बाद से ये मायने बदले हुए है। मोदी सरकार के लोककल्याणकारी प्रयासों से हालात व सोच दोनों बदल रहे हैं ।पिछले आठ साल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्वावलंबन, स्वास्थ्य ,सुरक्षा, शिक्षा को लेकर काफी कुछ किया गया है जिस के सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूर दृष्टि का नतीजा है कि स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग टायलेट, घरों में शौचालय जैसी मामूली समझी जाने वाली सुविधाएं बेटियों महिलाओं के लिये उपलब्ध हो रही हैं। इसके अलावा सरकार कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के माध्यम से आग्रह जागरण व सख्ती से महिला लिंगानुपात में बढ़ रहे अंतर को भी कम रही है।

मीना चौबे

केंद्र की मोदी सरकार ने महिला सशक्तिकरण को काफी बढ़ावा दिया है। ये योजनाएं कमजोर और पीड़ित शोषित महिलाओं की आवाज उठाने में मदद कर रही हैं। मोदी सरकार ने महिला हेल्पलाइन योजना ,सुकन्या समृद्धि योजना,स्वाधार गृहकामकाजी महिला छात्रावास महिला ई–हाट आदि योजना प्रभावकारी बनाया वहीं महिलाओं को नौकरी में 33 फीसद आरक्षण जैसी कई क्रान्तिकारी योजनाएं लागू कर महिलाओं के जीवन में आमूलचूल बदलाव लाने के लिए काम किया है।

मोदी सरकार ने बेटियों को बचाने के लिए बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरूआत की। इस अभियान के तहत लोगों को जागरूक करने की कोशिश की जाती है, ताकि फिर कोई बेटी गर्भ में या फिर पैदा होते ही न मार दी जाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अभियान की शुरुआत 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत में की थी। इस अभियान के तहत घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं को भी मदद दी जा रही है।

महिलाओं को रसोई में लकड़ी और कोयले के धुएं से मुक्ति दिलाने के लिए केन्द्र सरकार ने 1 मई 2016 को प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना की शुरूआत की ।इस योजना के तहत गरीब परिवारों को फ्री में रसोई गैस सिलेंडर दिये गए। देश भर में करीब 9 करोड़ से ज्यादा आर्थिक रूप कमजोर परिवारों को गैस कनेक्शन जा चुके हैं। इस से महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार हुआ, खाना बनाने में समय की बचत हुयी व महिलाओं को धुऐं से होने वाली बीमारियों से बचाव हुआ। प्रधानमंत्री मोदी की पहल पर केन्द्र सरकार ने 22 जनवरी 2015 को सुकन्या समृद्धि योजना की शुरूआत की। इस योजना के तहत 10 साल से कम उम्र की बच्चियों के बैंक या डाकघर में खातें खोले गए। इस योजना के तहत खोले गए खातों में जमा रकम पर सबसे ज्यादा ब्याज मिलता है।

आजादी के बाद पहली बार मोदी सरकार ने सुरक्षित मातृत्व वन्दन योजना का सूत्रपात किया। 10 अक्टूबर 2019 को शुरू की गई इस योजना के तहत मां बनने वाली महिलाओं को सुरक्षित प्रसव के लिए निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं दी जाती हैं। साथ ही नव प्रसूता माताओं को उनकी देखभाल के लिए सरकार की ओर से आर्थिक मदद भी दी जाती है ताकि प्रसव के बाद गरीबी की वजह से वो कुपोषण की शिकार न हो जाएं। ऐसे ही स्किल डेवलपमेंट ,विभिन्न स्किलो के साथ साथ सिलाई मशीन के जरिए भी स्वावलंबन लाया जा रहा है। इस योजना के तहत केन्द्र सरकार की ओर से हर राज्य में आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की महिलाओं को सिलाई की मशीन दी जा रही है। जो महिलाएं सिलाई–कढ़ाई जानती है, वह आवेदन कर सिलाई मशीन ले सकती हैं। हर राज्य में पचास हजार सिलाई मशीन दी जा रही है। केंद्र सरकार ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए 8 अप्रैल 2015 को मुद्रा योजना की शुरूआत की। इस योजना के तहत महिलाओं को आसान शर्तों पर कम ब्याज पर लोन दिया जा रहा है ताकि वो आत्मनिर्भर बन सके। अब तक करोड़ों महिलाएं इस योजना का लाभ उठा चुकी हैं। सरकार द्वारा महिला शक्ति केंद्र की स्थापना की योजना भी बनायी गयी है। यह योजना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अंतर्गत संचालित की गई है। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में भी गरीब व पिछड़ी महिलाओं को सामाजिक सहभागिता में आगे लाने के लिए प्रयास किया जा है।

स्पष्ट है कि आजादी के सात दशक बाद देश की आधी आबादी को सशक्त बनाने की योजना अब मूर्त रूप ले गढ़ रही – चढ़ रही है बढ़ रही है ,और इनके सकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं।

लोग ठीक ही कहते है कि "मोदी है , तो मुमकिन है "।

आनन्दपूर्ण जीवन हिन्दुत्व का ध्येय

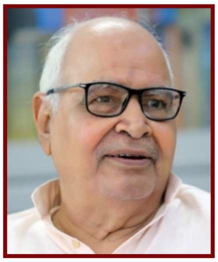

हृदय नारायण दीक्षित

‘मैं’ से ‘हम’ की अंतर्यात्रा आनंददायी है। ‘मैं’ होना एकाकी है। एकाकी में उदासी है और विषाद है। ‘हम’ सामूहिकता हैं और प्रसाद हैं। ‘मैं’ होना दुखदायी है। ‘हम’ होना विश्व का अंग होना है। ‘मैं’ होना उल्लासहीनता है। ‘हम’ होना उल्लासपूर्ण सांस्कृतिक अनुभूति है। ‘मैं’ होना सिकुड़ना है और ‘हम’ होना विस्तीर्णता है। आदिम काल में ‘मैं’ भयभीत था। वह ‘मैं’ से ‘हम’ हुआ। सामूहिक हुआ। ‘हम’ सामूहिकता है। फिर सामूहिक जीवन सामाजिक हुआ, सांस्कृतिक हुआ। मानव जाति में संवेदनशीलता बढ़ी। लोकजीवन व्यवस्थित हुआ। सोच विचार बढ़ा। तर्क प्रतितर्क हुए। वाद विवाद संवाद बढ़ा। दर्शन का विकास हुआ। जीवन नियमबद्ध हुआ। इसी का नाम धर्म हुआ। आधुनिक हिंदुत्व इसी परंपरा का अमृत प्रसाद है।

> धर्म सभी कर्तव्यों का नियामक बना। लोकमंगल का ध्येय मार्गदर्शी बना। आनंदपूर्ण जीवन हिन्दुत्व का ध्येय और परिणाम बना। हिन्दुत्व का प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय है।

मैं हूँ। यह हमारी अस्मिता है। मैं समुद्र की लहरों में उठती विलीन होती बूँद हूँ। बूँद इकाई है। इकाई लघुता है। लघुतम है। समुद्र ऐसी ही अनंत नाशवान इकाइयों की अनंत जलराशि है। इकाई की अस्मिता अनंत का भाग है। स्वयं के बोध में मैं अनंत हूँ। मैं अनंत में जन्म लेता हूँ। अनंत में बढ़ता हूँ, अनंत में यशस्वी होता हूँ। अनंत कोई ओर छोर नहीं। अनंत अंतहीन प्रवाह है। भारतीय धर्म परंपरा में मैं लघुता है, हम होना महत्ता है। हम का विस्तार अनंत में है।

उत्सव सामूहिक होते हैं। आनंदित करते हैं। एक अकेला मनुष्य उत्सवों का आयोजन नहीं कर सकता। साथ साथ चलना अकेले चलने की तुलना में ज्यादा आनंद देता है। परस्पर वार्ता और संवाद आनंद देता है। ऋग्वेद के अंतिम सूक्त में प्रीतिकर उल्लेख है, ‘‘हम साथ साथ चलें। परस्पर प्रीतिपूर्ण वार्ता करें। समान मन से ज्ञान प्राप्ति करें – संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनासि जानताम।’’ पूर्वज सामूहिकता के आनंद से सुपरिचित थे। इसी मन्त्र में आगे कहते हैं, ‘‘पूर्व काल में भी हमारे पूर्वज सामूहिक उपासना करते रहे हैं – यथापूर्वे संजानाना उपासते।’’

प्राकृतिक आपदाएं आती हैं। अधिक वर्षा बाढ़ लाती है। अवर्षण सूखा लाता है। तमाम हिंसक पशु मानव जीवन को त्रस्त करते हैं। इसलिए मनुष्य में असुरक्षा बोध होता है। एकाकी मनुष्य में असुरक्षा बोध ज्यादा होता है। अंतर्विरोधों से संघर्ष में सामूहिक जीवन उपयोगी होता है। साथ साथ रहने से असुरक्षा बोध नहीं होता। सामूहिकता से ‘मैं’ ‘हम’ बना। ‘हम’ ने सुरक्षा भाव बढ़ाया। विश्व की तमाम सभ्यताओं में सामूहिक जीवन का विकास बाद में हुआ। इसमें व्यक्तिगत उपलब्धि पर जोर है। भारतीय संस्कृति परंपरा में सामूहिक उपलब्धि आनंदकारी है। भारत में ऋग्वेद के रचनाकाल के पहले से ही सामूहिक जीवनशैली

का विकास हो चुका था। वैदिक धर्म में 'हम' भाव का लगातार विकास हुआ। पृथ्वी माता हो गईं। आकाश पिता हो गए। प्रकृति की शक्तियां देवता जानी गईं। धर्म सभी कर्तव्यों का नियामक बना। लोकमंगल का ध्येय मार्गदर्शी बना। आनंदपूर्ण जीवन हिन्दुत्व का ध्येय और परिणाम बना। हिन्दुत्व का प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय है।

भारतीय चिंतन में नारद निराले पात्र हैं। वे बिना किसी वाहन के सभी लोकों का भ्रमण करते हैं। वह भी वाद्य संगीत वीणा लेकर। वे वैदिक काल में हैं। उत्तर वैदिक काल में हैं। पुराण कथाओं में उनकी गहन उपस्थिति है। वे रामायण में हैं। महाभारत में भी हैं। ऐसा निराला पात्र दुनिया की किसी भी सभ्यता, संस्कृति या मिथ में नहीं मिलता। लेकिन छान्दोग्य उपनिषद की एक सुंदर कथा में वे अशांत हैं। वे उस समय के विद्वान सनत कुमार के पास गए। बोले, हे भगवन् उपदेश दीजिए। सनत् कुमार ने कहा, ''तुम जो जानते हो, वह बताओ।'' नारद ने कहा, ''मैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अथर्ववेद जानता हूँ। इतिहास, पुराण, व्याकरण, श्राद्धकल्प, गणित, निधिशास्त्र, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, देव विद्या, ब्रह्म विद्या, क्षत्र विद्या, नक्षत्र विद्या, देवजन विद्या आदि जानता हूँ।'' नारद अनेक विषयों के जानकार हैं। इससे ज्ञात होता है कि इस उपनिषद् के रचनाकाल में शिक्षा और ज्ञान के अनेक विषय — ज्ञान अनुशासन थे। नारद ने कहा, ''मैं केवल मन्त्रवेत्ता हूँ। आत्मवेत्ता नहीं हूँ। मैंने विद्वानों से सुना है कि आत्मवेत्ता शोक को पार कर लेता है। आप मुझे शोक से पार करें।'' भारतीय परंपरा में तमाम विषयों की जानकारी को ही सुख आनंद की प्रतिभूति नहीं माना गया। आत्म ज्ञान से सुख की प्राप्ति होती है।

जानकारियां रूप और नाम का संचय होती हैं। बोलने सुनने में नाम का प्रयोग होता है। रूप देखने से ज्ञान का भाग बनता है। सनत् कुमार ने नारद को बताया, ''ऋग्वेद आदि विषय नाम है। नाम की सीमा है। नारद ने पूछा, ''क्या नाम से भी कुछ बड़ा है? आप हमें वही बताएं।''(7–1–5) सनत् कुमार ने उत्तर दिया, ''वाक् नाम से बढ़कर है। वाक् या वाणी ही ऋग्वेद आदि को प्रकट करती है। वाणी न होती तो धर्म अधर्म का ज्ञान न होता। इसलिए तुम वाक् की उपासना करो।'' इसी तरह सनत् कुमार ने मन की शक्ति बताई, ''मन की गति जहां तक है वहां तक स्वेच्छा गति होती है।'' नारद ने फिर पूछा, ''क्या मन से भी बढ़कर कुछ है?'' सनत् कुमार ने कहा, ''संकल्प मन से बढ़कर है। पुरुष संकल्प करता है, वह बोलने की इच्छा करता है। वाणी को प्रेरित करता है। नाम में सब मंत्र एक रूप हो जाते हैं। मन्त्रों में कर्म का अंतर्भाव हो जाता है। आगे कहते हैं, ''मन आदि संकल्परूप, संकल्पमय संकल्प में प्रतिष्ठित हैं। अंतरिक्ष और पृथ्वी ने संकल्प किया है, वायु और आकाश ने संकल्प किया है। वर्षा संकल्प के लिए समर्थ होती है। कर्मों के संकल्प के लिए लोक फल समर्थ होते हैं। लोकों के संकल्प के लिए सब समर्थ होते हैं। तुम संकल्प की उपासना करो।'' संकल्प में बड़ी क्षमता है।

संकल्प में ऊर्जा का जागरण होता है। हिन्दुओं में प्रत्येक कार्य के पहले संकल्प की परंपरा है। नारद ने पूछा कि क्या संकल्प से बढ़कर भी कुछ है? सनत् कुमार ने बताया, ''चित्त संकल्प से बड़ा है। पुरुष जब चेतनावान होता है तभी वह संकल्प करता है। मनन करता है। वाणी को प्रेरित करता है। उसे नाम से प्रवृत्त करता है। नाम में मंत्र एक रूप होते हैं और मन्त्रों में कर्म।'' सनत् कुमार ने बताया कि ध्यान चित्त से बढ़कर है। पृथ्वी ध्यान करती है। अंतरिक्ष ध्यान करता है और जल भी। देवता भी ध्यान करते हैं। ध्यान के लाभ का अंश पाकर मनुष्य महत्वपूर्ण होते हैं। नारद तुम ध्यान की उपासना करो।'' फिर ध्यान से विज्ञान को बड़ा बताते हैं, ''विज्ञान से ही पुरुष ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद्, इतिहास, पुराण, व्याकरण, ब्रह्म विद्या आदि सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान पाता है। जहां तक विज्ञान की गति है, वहां तक उसकी स्वेच्छा गति होती है। लेकिन विज्ञान से बल श्रेष्ठ है, सौ विज्ञानवानों को भी बलवान हिला देता है। वह श्रवण करने वाला होता है। कर्ता होता है। बल से पृथ्वी, अंतरिक्ष, पर्वत, देवता, पशु, पक्षी, वनस्पति, कीट, पतिंग स्थित हैं।'' लेकिन अन्न बल से श्रेष्ठ है, ''अन्न से वह द्रष्टा होता है। श्रोता, मनन कर्ता होता है। विज्ञाता होता है। तुम अन्न की उपासना करो।''

PFI पर 5 साल का प्रतिबंध, 8 संगठनों पर भी एक्शन

टेरर फंडिंग मामले की जांच का सामना कर रहे पीएफआई यानी पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया पर बैन (Ban on PFI) लगा दिया गया है। दिल्ली–यूपी से लेकर देश के अलग–अलग ठिकानों पर ताबड़तोड़ एक्शन के बाद केंद्र सरकार ने UAPA के तहत इस संगठन को गैरकानूनी घोषित कर दिया है। सरकार द्वारा जारी नोटिफिकेशन के मुताबिक, पीएफआई पर पांच साल का बैन लगाया गया है। इतना ही नहीं, पीएफआई के अलावा उससे जुड़े अन्य आठ संगठनों पर भी बैन लगाया गया है। टेरर लिंक के आरोप में देश के कई राज्यों में पीएफआई पर लगातार छापेमारी के बाद केंद्र सरकार ने यह एक्शन लिया है।

बताया जा रहा है कि जांच एजेंसियों की ओर से टेरर लिंक के पुख्ता सबूत मिलने के बाद ही गृह मंत्रालय ने यह कार्रवाई की है। गृह मंत्रालय के मुताबिक, पीएफआई और उससे जुड़े सभी सहयोगी संगठनों पर पांच साल के लिए त्वरित प्रभाव से प्रतिबंध लगा दिया गया है। बताया जा रहा है कि प्रतिबंधित संगठन सिमी और जेएमबी से पीएफआई के लिंक मिले थे, जिसके बाद यह कार्रवाई हुई है। बता दें कि 22 सितंबर और 27 सितंबर को पीएफआई पर देशव्यापी छापेमारी हुई थी और सैकड़ों कैडर को गिरफ्तार किया गया था।

आठ संगठनों पर प्रतिबन्ध

केंद्र सरकार द्वारा जारी नोटिफिकेशन के मुताबिक, पीएफआई के अलावा 8 सहयोगी संगठनों पर भी कार्रवाई की गई है। पीएफआई के अलावा रिहैब इंडिया फाउंडेशन (RIF), कैंपस फ्रंट ऑफ इंडिया (CFI), ऑल इंडिया इमाम काउंसिल (AIIC), नेशनल कॉन्फेडरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स ऑर्गनाइजेशन (NCHRO), नेशनल वीमेन फ्रंट, जूनियर फ्रंट, एम्पावर इंडिया फाउंडेशन और रिहैब फाउंडेशन, केरल जैसे सहयोगी संगठनों पर भी बैन लगाया गया है।

एनआईए के रेड

केंद्र सरकार ने ऐसे वक्त में यह फैसला लिया है, जब कुछ दिन पहले ही एनआईए–ईडी ने मिलकर देश के अलग–अलग राज्यों में पीएफआई के ठिकानों पर छापेमारी की थी और उसके 200 से अधिक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया था। एनआआई ने पहला छापा 22 सितंबर को मारा था, जहां 11 राज्यों में करीब 96 जगह छापेमारी के दौरान 100 से अधिक वर्कर्स अरेस्ट किए गए थे। उसके बाद 27 सितंबर यानी मंगलवार को भी यूपी–दिल्ली समेत देश के 8 राज्यों में स्टेट पुलिस ने छापेमारी की थी और सैकड़ों वर्कर्स को गिरफ्तार किया था।

2006 में संगठन की स्थापना

पीएफआई का गठन 2006 में किया गया था और वह भारत में हाशिये पर मौजूद वर्गों के सशक्तिकरण के लिए नव सामाजिक आंदोलन चलाने का दावा करता है। हालांकि, कानून प्रवर्तन एजेंसी का दावा है कि पीएफआई कट्टर इस्लाम का प्रसार कर रहा है। इस संगठन का गठन केरल में किया गया था और इसका मुख्यालय दिल्ली में है। पीएफआई के खिलाफ राष्ट्रव्यापी कार्रवाई के बाद उस पर देशभर में प्रतिबंध लगने की संभावना पहले ही थी।

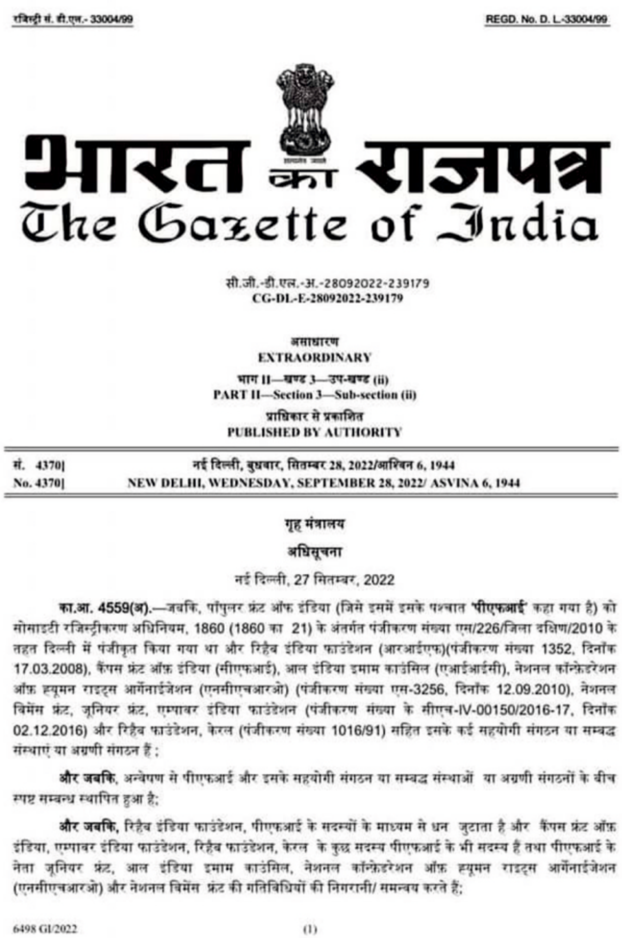

रजिस्ट्री सं. डी.एल.- 33004/99 REGD. No. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-28092022-239179
CG-DL-E-28092022-239179

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 4370] नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 28, 2022/आश्विन 6, 1944
No. 4370] NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 28, 2022/ ASVINA 6, 1944

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 सितम्बर, 2022

का.आ. 4559(अ).—जबकि, पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (जिसे इसमें इसके पश्चात **'पीएफआई'** कहा गया है) को सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860 (1860 का 21) के अंतर्गत पंजीकरण संख्या एस/226/जिला दक्षिण/2010 के तहत दिल्ली में पंजीकृत किया गया था और रिहैब इंडिया फाउंडेशन (आरआईएफ)(पंजीकरण संख्या 1352, दिनांक 17.03.2008), कैंपस फ्रंट ऑफ़ इंडिया (सीएफआई), आल इंडिया इमाम काउंसिल (एआईआईसी), नेशनल कॉन्फ़ेडरेशन ऑफ़ ह्यूमन राइट्स आर्गेनाईजेशन (एनसीएचआरओ) (पंजीकरण संख्या एस-3256, दिनांक 12.09.2010), नेशनल विमेंस फ्रंट, जूनियर फ्रंट, एम्पावर इंडिया फाउंडेशन (पंजीकरण संख्या के सीएन-IV-00150/2016-17, दिनांक 02.12.2016) और रिहैब फाउंडेशन, केरल (पंजीकरण संख्या 1016/91) सहित इसके कई सहयोगी संगठन या सम्बद्ध संस्थाएं या अग्रणी संगठन हैं ;

और जबकि, अन्वेषण से पीएफआई और इसके सहयोगी संगठन या सम्बद्ध संस्थाओं या अग्रणी संगठनों के बीच स्पष्ट सम्बन्ध स्थापित हुआ है;

और जबकि, रिहैब इंडिया फाउंडेशन, पीएफआई के सदस्यों के माध्यम से धन जुटाता है और कैंपस फ्रंट ऑफ़ इंडिया, एम्पावर इंडिया फाउंडेशन, रिहैब फाउंडेशन, केरल के कुछ सदस्य पीएफआई के भी सदस्य हैं तथा पीएफआई के नेता जूनियर फ्रंट, आल इंडिया इमाम काउंसिल, नेशनल कॉन्फ़ेडरेशन ऑफ़ ह्यूमन राइट्स आर्गेनाईजेशन (एनसीएचआरओ) और नेशनल विमेंस फ्रंट की गतिविधियों की निगरानी/ समन्वय करते हैं;

6498 GI/2022 (1)

गोवंशीय पशुओं का टीकाकरण

उत्तर प्रदेश के पशुधन, दुग्ध विकास एवं अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री श्री धर्मपाल सिंह ने कहा है कि प्रदेश के पशुओं को लम्पी स्किन डिजीज से बचाव एवं नियंत्रण के लिए सरकार द्वारा सघन अभियान चलाकर युद्ध स्तर पर प्रभावी कार्यवाही की गयी है। जिसके परिणामस्वरूप उ0प्र0 में लम्पी रोग की संक्रमण दर अन्य राज्यों की तुलना में कम है एवं गोवंश की हानि अन्य की अपेक्षा न्यून है। उन्होंने बताया कि मा0 मुख्यमंत्री जी लगातार की गयी कार्यवाही का अनुश्रवण करते हुए मार्गदर्शन भी प्रदान कर रहे हैं। पश्चिमी प्रदेश के 26 जनपद लम्पी स्किन रोग से प्रभावित हैं। आज तक 26024 पशु प्रभावित मिले हैं, जिनमें 16872 पशुओं का उपचार कर रोकमुक्त किया गया है। 273 गोवंश की मृत्यु हुई है। राज्य सरकार की सजकता एवं प्रभावी कार्यवाही से पशुओं के संक्रमण से ठीक होने का प्रतिशत 64 प्रतिशत है और मृत्युदर मात्र 01 प्रतिशत है।

पशुधन मंत्री ने बताया कि आन्ध्रप्रदेश, गुजरात, हिमांचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा आदि प्रदेशों की तुलना में राज्य सरकार द्वारा सफलता पूर्वक इस रोग पर नियंत्रण हेतु कार्य किया जा रहा है। जिससे रोग का प्रसार सीमित हो गया है। श्री धर्मपाल सिंह ने बताया कि भारत में 14 प्रदेश लम्पी वाइरस के अटैक से प्रभावित है जिनमें सर्वाधिक प्रभावित राज्य राजस्थान है। राजस्थान में 11,34,709 प्रभावित हुए हैं जिनमें 50,366 मृत्यु हुई है। पंजाब में 1,73,159 प्रभावित हुए हैं, जिनमें 17,200 मृत्यु हुई है। गुजरात में 1,56,236 प्रभावित हुए हैं, जिनमें 5,544 मृत्यु हुई है। हिमाचल प्रदेश में 66,333 प्रभावित हुए हैं जिनमें 2,993 मृत्यु हुई है। हरियाणा में 97,821 प्रभावित हुए हैं जिनमें मृत्यु हुई 1,941 है। जम्मू–कश्मीर में 32,391 प्रभावित हुए हैं जिनमें मृत्यु हुई 333 है। उत्तराखण्ड में 11,598 प्रभावित हुए हैं जिनमें मृत्यु हुई, 189 हैं तथा उत्तर प्रदेश में 26,024 प्रभावित हुए है, जिनमें मृत्यु हुई 273 की है।

पशुधन मंत्री ने बताया कि जब तक यह लम्पी स्किन डिजीज का प्रकोप समाप्त नहीं हो जाता तब तक पशुओं के बचाव हेतु टीकाकरण अभियान लगातार जारी रहेगा। इसके लिए प्रदेश में 1126 टीमें टीकाकरण के लिए गठित की गयी है, जिनके द्वारा प्रदेश में 26,04,500 पशुओं को गोटपॉक्स का टीका लगाया गया। गोवंशीय पशुओं को बचाने के लिए टीकाकरण की कार्यवाही की जा रही है, इसके लिए 82.50 लाख वैक्सीन उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि स्वस्थ पशुओं को यह बीमारी संक्रमित न करें इसके लिए पशुओं के आश्रय स्थल पंचायतीराज एवं नगर निगम के सहयोग से सोडियम हाइपोक्लोराइट/फिनायल आदि का छिड़काव किया जा रहा है। इसके अलावा पशुओं को मच्छर, मक्खियों आदि से दूर रखने के लिए कीटनाशक दवाओं का भी लगातार छिड़काव किया जा रहा है।

श्री धर्मपाल सिंह ने बताया कि लम्पी स्किन डिजीज अन्य क्षेत्रों में न फैले इसलिए सुरक्षा कवच को सुदृढ़ करते हुए रिंग एवं बेल्ट के माध्यम से सघन टीकाकरण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बेल्ट–1 नेपाल से मध्यप्रदेश तक 320 किमी0 तथा बेल्ट–2 बुन्देलखण्ड क्षेत्र 155 किमी0 तक सुरक्षा घेरा तैयार किया गया है जो 10 किमी0 चौड़ा है। अर्न्तराज्यीय एवं अर्न्तजनपदीय सीमा से लगे जनपदों में सीमावर्ती/विकासखण्ड/ग्रामों को टीकाकरण में प्राथमिकता दी जा रही है। प्रदेश स्तर पर लम्पी चर्म रोग के सघन अनुश्रवण के लिए टीम–9 का शुरूआत में ही गठन कर दिया गया था। इसके अतिरिक्त जनपदों में जनपदीय एवं विकासखण्ड स्तर पर कर्मियों को प्रशिक्षित किया गया है। इसके अतिरिक्त संक्रमित गोवंश को स्वस्थ पशुओं से अलग किया जा रहा है।

पशुधन मंत्री ने बताया कि पशुओं को तत्काल उपचार की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 127 मोबाइल वेटनरी यूनिट संचालित की जा रही है। गोआश्रय स्थलों के प्रभावित पशुओं को अलग रखने के लिए 76 आइसोलेशन सेंटर स्थापित किये गये हैं। बीमारी से बचाव के लिए सभी जनपदों में पर्याप्त दवायें उपलब्ध हैं। उन्होंने बताया कि पशुपालकों को मच्छर आदि भगाने के लिए नीम की पत्तियों को जलाकर धुऑं करने के लिए जागरूक किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त नीम की पत्ती को उबालकर हल्दी के साथ लेप बनाकर लगाने का परामर्श दिया जा रहा है। बीमारी की रोकथाम तथा लोगों को जागरूक करने के लिए प्रचार–प्रसार भी किया जा रहा है।

श्री धर्मपाल सिंह ने बताया कि राज्य सरकार इस बीमारी के रोकथाम, उपचार एवं नियंत्रण हेतु लगातार कार्यवाही करते हुए अनुश्रवण भी किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रभावित जनपदों के जिला प्रशासन को निर्देश दिये गये हैं कि पशुओं के बचाव हेतु हरसंभव उपाय किये जायें, इसके अलावा जनपद एवं मुख्यालय स्तर पर स्थापित कन्ट्रोल रूम में सूचना प्राप्त होते ही इलाज की तुरन्त व्यवस्था कराई जा रही है। उन्होंने बताया कि मुख्यालय में स्थापित कन्ट्रोल के नम्बर 0522–2741992, 7880776657 एवं टोल फ्री नम्बर–1800 180 5141 का व्यापक प्रचार प्रसार किया जा रहा है।

* प्रदेश में लम्पी डिजीज से बचाव के लिए यु)स्तर पर प्रभावी कार्यवाही की गयी
* अन्य राज्यों की तुलना में प्रदेश में लम्पी रोग के संक्रमण की दर कम एवं गोवंश हानि न्यून
* प्रदेश में 1126 टीमें टीकाकरण के लिए गठित की गयी
* प्रदेश में 26,04,500 पशुओं को गोटपश्वक्स का टीका लगाया गया
* टीकाकरण के लिए 82.50 लाख वैक्सीन उपलब्ध
* पशुओं को तत्काल उपचार की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 127 मोबाइल वेटेनरी यूनिट संचालित की जा रही।

भारतीय राजनीति में प्रधान सेवक

गुजरात के मुख्यमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री तक की "राष्ट्रसाधना " को प्रधानसेवक के रूप में अहर्निश पूरा किया। राजनीति में सुचिता,लाल बत्ती वीआईपी संस्कृति का अंत,अपराधीकरण का दमन कर ,राष्ट्र समाज व्यक्ति के समग्र जीवन विकास के मार्ग को प्रसस्त किया।

जनसेवा में लक्ष्य अंत्योदय,प्रण अंत्योदय, पथ अंत्योदय पर चलकर एकात्म मानववाद के सनातन दर्शन के प्रति पूरी दुनिया की श्रद्धा विश्वास को बढ़ा दिया।

जिस कार्य से किसी को सुख मिले उसका नाम सेवा है और सेवा का जन्म जिस भाव से होता है उसे समर्पण कहते है । समर्पण के बिना सेवा का उदय होता ही नही,वास्तव में सेवा वह है जो किसी दूसरे को सुख देने के लिये निष्प्रह और निष्काम भाव से की जाती है । मन से सबका हित चाहना ही सेवा है । ऐसा तभी सम्भव है जब हम सबमे स्वयं को देखे । " आत्मवत् सर्वभूतेषु " की भावना से दूसरे का सुख दुःख अपना सुख दुःख हो जाता है ।

चराचर जगत में लोक सेवा भी समानरूप से महत्वपूर्ण है आत्मा ही समष्टि रूप से परमात्मा है। इस लिए लोकसेवा वास्तव में भगवान की ही सेवा है । लोक सेवा खूब करनी चाहिये । मनुष्य का वयक्तिगत अस्तित्व समाज सापेक्ष है । बिना समाज के सहयोग वह जी नही सकता ,जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य का भरण पोषण, शिक्षा दीक्षा और विकास समाज से प्राप्त होता है अतएव वह समाज का ऋणी है । समाज के इस ऋण से मुक्त होने के लिये लोक सेवा परमावश्यक है । लोक सेवा प्रायः लोग समाज में स्वयं को विशिष्ट दिखाने के लिये करते है । अधिकांशतः लोकसेवा करने वालो का कोई न कोई स्वार्थ छिपा रहता है । कुछ समर्थ लोग अन्न ,वस्त्र, धन आदि के द्वारा दुसरो की सहायता करते है ,यह लोक सेवा की दृष्टि से सराहनीय है परन्तु जब ऐसी सेवा के पीछे अपने प्रभुत्व को प्रदर्शित करने अथवा यश लोलुपता या अन्य कोई निजी लाभ की भावना होती है तब वह कार्य सेवा की कोटि में नही रह जाता है वास्तव में सेवा के बदले में कुछ भी चाहना सेवा को बेच देना है, सेवा वह है जो निष्प्रह की जाय ।

साधक राज कुमार

सेवा देश, काल और पात्र का विचार करके की जानी चाहिये । यथा गंगा के तट पर प्याऊ लगा देना सेवा नही है । लोक सेवा का एक नाम परोपकार भी है । हमारे प्राचीन ग्रंथो में परोपकार की महिमा का बहुत वर्णन किया गया है ।

बाबा तुलसीदास जी ने कहा है –

"परहित सरिस धर्म नहि भाई,परपीड़ा सम नहि अधमाई "

महर्षि वेद व्यास कृत पुराण साहित्य के विषय में कहा है –"

अष्टादस पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परिपीडनम ।।"

जिस कार्य से दूसरे का उपकार हो उसके समान कोई धर्म नही है अर्थात अन्य कुछ करणीय नही है । परोपकार पुण्य का और परपीड़न पाप का माध्यम है ।

अतः लोकसेवा का बड़ा महत्व है परन्तु वह उदारता और दयाबुद्धि पूर्वक होनी चाहिये । धन, सम्पत्ति, शारीरिक सुख और मान बड़ाई, प्रतिष्ठा आदि को न चाहते हुये ममता, आसक्ति और अहंकार से रहित होकर मनसा, वाचा, कर्मणा , दूसरे को सुख पहुचाने की चेष्टा करना लोकसेवा है ।

भारतीय संस्कृति " वसुधैव कुटुम्बकम् " के भाव से लोकसेवा का भाव भरती है , उसका संकल्प उद्घोष है –

" सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभागभवेत ।"

लोकसेवा भी बिना समर्पण के सिद्ध नही होती, उसके लिये भी हम सब एक भारती की सन्तति है " माता भूमिः पुत्रोहम पृथिव्याम् " की भाव भावना से स्वयं को संस्कारित संकल्पित करने की साधना आवश्यक है ।

उक्त भावना से संस्कारित व्यक्ति का दृष्टिकोण व्यापक हो जाता है, वह सम्पूर्ण मानव जाति को अपना परिवार और सम्पूर्ण धरती को मातृवत् प्रेम करता है । प्रेम समर्पण अपने कार्य का आधार है, साधन साध्य का कारक होता है , सेवा रूपी साध्य के साधन के विषय में विचार भी महत्वपूर्ण है । साध्य की सिद्धता साधन की पवित्रता, क्षमता, दक्षता और समर्थता पर निर्भर करती है । व्यवहारिक जीवन में प्यासे को पानी, भूखे को अन्न, नंगों को वस्त्र, बीमार को दवाई, अशिक्षित को शिक्षा, भयभीत को अभयदान आदि अनेक सेवा के साधन है ।

सेवा के अनेक स्वरूप है– भगवान की कृपानुभूति से ही यह सेवा सम्भव हो पाती है तदर्थ समर्पण ही मुख्य आधार और कारक है । समर्पण से अभिमान तिरोहित हो जाता है जिससे सेवा बन पाती है । सेवा में सर्वाधिक महत्व की बात यह है कि व्यक्तिगत सेवा निःस्वार्थ,जिसका बखान न किया जाय , इसकी चर्चा करने से अभिमान के जाग्रत होने की सम्भावना रहती है अस्तु निष्काम और गोप्य भाव से ही सेवा करनी चाहिये । आज सरकारें भी लोककल्याण कारी योजनाए लाती है जिनका जनसामान्य लाभ उठा सके उसके लिये योग्य प्रचार ,प्रसार आवश्यक है ।पर केवल प्रचार ही प्रचार उचित नही है जैसे दो केले ,एक सेव चार लोग मिलकर दे रहे है , दस लोग मिलकर एक वृक्ष लगा रहे है दूसरे दिन देखभाल के आभाव में पशु कर जाते है या सुख जाता है। कई बार लगता है ये उपदेश की बाते है। केवल बोलने लिखने के लिये है । पर नरेंद्र मोदी जी ने जीवन के संकल्प को सरल कर " सबका साथ,सबका विकास,सबका बिश्वास,सबका प्रयास " पर मन कर्म वचन से सबके साथ मिलकर सेवा समर्पण की साधना को करने की मन की बात करते है ।साधक का हार्दिक अनुरोध है कि आइये मिलकर नये भारत के निर्माण में सनातन संस्कारो,विचारों का सहारा ले एक भारत,श्रेष्ठ भारत के निर्माण में सहयोगी बने ।

सांस्कृतिक राष्ट्रीयता ही भारत की आत्मा है!

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी संकल्प फाउंडेशन व पूर्व सिविल सेवा अधिकारी मंच के व्याख्यानमाला को डॉ. आम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा की पूरी दुनिया एक ओर जहाँ विश्व को बाजार मानती है वहीं भारत एकमात्र ऐसा देश है जो विश्व को परिवार मानने की परंपरा (वसुधैव कुटुम्बकम) में विश्वास करता है। भागवत जी ने कहा, पश्चिमी देशों में नेशन का विकास और हमारे देश में राष्ट्र के विकास का क्रम एकदम अलग है। हमारा नेशनलिज्म नहीं है, न ही राष्ट्रवाद है, हमारी तो राष्ट्रीयता है। आइये श्री भागवत जी के वक्तव्यों के आलोक में भारत की आत्मा में निहित राष्ट्रीयता को विशेष रूप से समझने का प्रयास करते हैं।

राष्ट्र शब्द की उत्पत्तिः 'राजृ–दीप्तो' अर्थात 'राजृ' धातु से कर्म में 'ष्ट्रन' प्रत्यय करने से राष्ट्र शब्द बनता है अर्थात विविध संसाधनों से समृद्ध सांस्कृतिक पहचान वाला देश ही एक राष्ट्र होता है। अमेरिका एक देश है क्यों की यूरोप की संस्कृति ने उसे समृद्ध किया न की अमेरिका ने एक समग्र संस्कृति का विकास किया था। आज एशिया में राष्ट्र की अभिव्यक्ति सिर्फ भारत के पास है क्यों की चीन, जापान और कोरिया तक सभी भारत के सनातन (शैव, वैष्णव, बौद्ध) संस्कृति से ही सुसंस्कृत एवं सम्पन्न हुए थे।

पश्चिम के व्याकरण में राष्ट्र को परिभाषित करने की अभिव्यक्ति ही नहीं है। नेशन शब्द का अभिर्भाव लैटिन भाषा की संज्ञा "नातिओ (natio)" से हुआ है जिसका अर्थ है नस्ल या जाति का विचार। नेशन से तात्पर्य है कि वह जन समूह साधारणतः समान भाषा, इतिहास, धर्म को मानता हो परन्तु भारत तो शताधिक भाषाएँ बोलता है। नेशन की अवधारणा पर यूरोप का विकास हुआ एवं जाति–नस्लों के आधार पर समाज एक दूसरे के अस्तित्व को मिटाने हेतु सदियों तक संघर्षरत रहा। नेशन का कोई सबसे संभावित पर्यायवाची हिंदी में है तो 'देश' है। देश शब्द की उत्पत्ति "दिश" यानि दिशा या देशांतर से हुआ जिसका अर्थ भूगोल और सीमाओं से है जो नेशन के पश्चिमी विचार को परिभाषित करता है। कुल मिलाकर पश्चिम ने नेशन के गर्भ से जन्मे अपने साम्राज्यवाद को ही राष्ट्र का पर्यायवाची मान लिया परन्तु ये सर्वथा गलत है। नेशन विभाजनकारी अभिव्यक्ति है जबकि राष्ट्र, जीवंत, सार्वभौमिक, युगांतकारी और हर विविधताओं को समाहित करने की क्षमता रखने वाला एक दर्शन है।

यही कारण है की भारत में आने वाले पश्चिमी अध्येता इस संस्कृति की सार्वभौमिक राष्ट्रीयता को जब नेशन के चश्में से देखते हुए इसकी सीमाओं को ढूंढने का प्रयास करते हैं तो कहते हैं भारत कभी देश नहीं था। सत्य भी है, भारत एक राष्ट्र है, राष्ट्रीयता को आत्मसात किये भारत जब रूस की सीमाओं से लेकर, हित्ती–मितन्नी और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप तक मिलता है तो इस विराटता को देश या नेशन की अवधारणा में कैसे समेटा जा सकता है?

अरब या यूरोप की संस्कृति, इतिहास लेखन पर टिकी है, यदि आज कुरआन या बाइबिल को अरब और यूरोप से हटा दिया

जाय तो उनकी पूरी धार्मिक, सांस्कृतिक विरासत ही ख़त्म हो जाएगी परतु भारत जैसे राष्ट्र की समग्रता तो किसी एक ग्रन्थ के हटा देने पर भी वैदिक, औपनिषदिक, शैव, शाक्त, अद्वैत, अनीश्वर आदि शताधिक मतों के रूप में यशस्वी रहेगी। यही है एक राष्ट्र की अभिव्यक्ति जिसे पश्चिम ने नेशन से जन्में एक भाषा, एक धर्म, एक पूजा पद्धति के साम्राज्यवादी ढांचे से व्यक्त नहीं किया जा सकता और अलग अलग विविधताओं को समेटकर राष्ट्र की अभिव्यक्ति में अपना भारत हजारों सालों से यशस्वी हो रहा है। भारत कभी सीमाओं के निर्धारण, इतिहास बोध और भूभागों को जीतने और बांटने जैसे छोटे लक्ष्यों पर नहीं टिका रहा। भारत में भगवान राम का जीवन चरित्र सहस्रों बार अपनी अपनी अभिव्यक्ति के अनुसार लिखा जाता रहा। तुलसीदास या कम्बन से वाल्मीकि के रामायण को कोई संकट नहीं है, यह राष्ट्रीयता है। क्या अब्राहमिक धर्मों की पुस्तकों में किसी भी प्रकार का कोई बदलाव किया जा सकता है? यह नेशन का साम्राज्यवाद है।

वेदों में राष्ट्रीयताः

भारतीय के सांस्कृतिक वैभव एवं दर्शन के एक प्रमुख स्थान श्री दक्षिणेश्वर मंदिर, कलकत्ता के दीवारों पर वेद–शास्त्रों के सुभाषित अंकित हैं उनमे से एक वैदिक मन्त्र ने मुझे आकर्षित किया यह था यजुर्वेद का "राष्ट्राभिवर्द्धन मन्त्र" है जो इस प्रकार है;

ऊँ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्,
आराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्।
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः,
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः,
पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

–शुक्ल यजुर्वेद (अध्याय 22, मन्त्र 22)

अर्थः हे ब्रह्म, हमारे देश में विद्वान समस्त वेद आदि ग्रंथों से देदिव्मान उत्पन्न हों। शासक, पराक्रमी, शस्त्र और शास्त्रार्थ में निपुण और शत्रुओं को अत्यंत पीड़ित करने वाले उत्पन्न हों। गौ, दुग्ध देने वाली और बैल भार ढोने वाला हो। घोड़ा शीघ्र चलने वाला और स्त्री बुद्धिमती उत्पन्न हो। प्रत्येक मनुष्य विजय प्राप्ति वाले स्वाभाव वाला, रथगामी और सभा प्रवीण हो। इस यज्ञकर्ता के घर विद्या, यौवन सम्पन्न और शत्रुओं को परे फेंकने वाले संतान उत्पन्न हों। हमारे देश के मेघ इच्छा–इच्छा पर बरसें और सभी औषधियां (अन्न) फल वाले होकर पकें। हमारे राष्ट्र के प्रत्येक मनुष्य का योग और क्षेम उसके उपभोग हेतु पर्याप्त हो। वैदिक काल में भी भारत की राष्ट्रीयता न केवल मानवों अपितु पशुओं, जीवों, कृषि, वनों आदि के कल्याण की कामना करता है।

कौटिल्य के अनुसार राष्ट्रः

कौटिल्य के अनेक स्थानों में देश के स्थान पर राष्ट्र शब्द का प्रयोग इसलिए किया है क्यों की सिर्फ भूगोल से समाज और राष्ट्र का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्र में जिन जिन वस्तुओं का होना अनिवार्य है उनका उल्लेख करके कौटिल्य ने उन गौण वृत्तियों वाले अवयवों जैसे कृषि, धान्य, उपहार, कर, वाणिज्–लाभ, नदी–तीर्थादि–लाभ एवं पत्तन आदि लाभ, सब राष्ट्र के लिए आवश्यक बतलाये गए हैं। राष्ट्र में जिन जिन वस्तुओं का होना आवश्यक है, जिन विशेषणों से विशिष्ट होने से देश, राष्ट्र हो सकता है, उनका निर्देश भी कौटिल्य ने किया है।

जिस देश की रक्षा सीमावर्ती पर्वत, अरण्य, नदी, समुद्र आदि भौगोलिक साधनों से सुगम हो, वह देश स्वारक्ष होकर राष्ट्र है। जो देश कृषि,खनिज द्रव्य, हस्ती, अरण्य आदि से युक्त, गोवंश के लिए अनुकूल, पुरुषों को हितावह, सुरक्षित गोचर भूमियुक्त, विविध पशुओं से संपन्न हो, यथासमय जिसमें वर्षा हो एवं जो जल–स्थल के विविध मार्गों से युक्त हो , वह राष्ट्र है। सारभूत, आश्चर्यपूर्ण, अत्यंत पवित्र तीर्थादि से युक्त, दंड एवं कर आदि को सहन कर सकने वाला, कर्मशील शिल्पी एवं किसानों से युक्त, बुद्धिमान गंभीर धार्मिक स्वामी से युक्त, वैश्य–शूद्रादि वर्णों के लोग जिस देश में पर्याप्त हो, वहां राजभक्त, पवित्र, निष्कपट एवं धार्मिक बन निवास करते हों, ऐसी जनपद–सम्पत से युक्त देश राष्ट्र है। कामन्दक आदि नीतिशास्त्रों ने भी इन्हीं बातों का वर्णन अपने ग्रंथों में किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्र की संकल्पनाः

राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ इसी महान राष्ट्रीयता की संकल्पना के आधार पर जब भारत को परिभाषित करते हुए इस्लाम और इसाइयत को भी इसी राष्ट्र की महायात्रा में शामिल होने की बात करता है तो साम्राज्यवादी मानसिकता से उपजे वैचारिक दैन्य के कारण छद्म बुद्धिजीवियों में हंगामा खड़ा हो जाता है। यदि आज भारत के मुस्लिम और इसाई, मस्जिद या चर्च जाते हुए भी इस बात में विश्वास करें की वो जिस भारत में सुख और सम्मान से जीवन जी रहे हैं उसके प्राचीन गौरव, सहिष्णुता और सामाजिक साहचर्य ने ही उन्हें इस समाज में उनके धार्मिक स्वरुप को स्वीकार करते हुए अपना पडोसी मान लिया तो वह संघ के इस दर्शन को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।

राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ जब कहता है की हमारे पूर्वज एक हैं एवं पूजा पद्धति बदलने भर से हमारा इतिहास, साझी विरासत और पूर्वज नहीं बदल जाते तो इसे देश के मुसलमानों एवं ईसाईयों को स्वीकार करना चाहिए क्यों की यह संघ का कोई नया दर्शन या एजेंडा नहीं है अपितु वैदिक काल से चले आ रहे राष्ट्रीयता के भाव की मूक भारतीय अभिव्यक्ति है। यह अभिव्यक्ति समय समय पर भारत की आत्मा में निहित राष्ट्रीयता के भाव ने सिद्ध भी किया है जिसका उदाहरण हैं इस देश में आये यहूदी, पारसी एवं कई अन्य धर्मों के लोग जो यहाँ पुष्पित पल्लवित हुए। न केवल भारत को अपितु संसार के सभी देशों को विश्व शांति हेतु इसी राष्ट्रीयता के भाव का पोषण करना चाहिए।

(लेखक शिवेश प्रताप सांस्कृतिक विषयों के जानकार हैं।)

संगठनात्मक गतिविधियां

गुवाहाटी (असम) में भाजपा, नॉर्थ-ईस्ट कार्यालय का उद्घाटन

'कार्यकर्ता, संगठन और विचारधारा के आधार पर आगे बढ़ने वाली पार्टी है भाजपा'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 29 अगस्त, 2022 को गुवाहाटी, असम के उजान बाजार में नवनिर्मित भाजपा के नॉर्थ–ईस्ट कार्यालय का उद्घाटन किया और इसे पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए संस्कार का केंद्र और पूर्वोत्तर को भाजपा का गढ़ बनाने का आधार केंद्र बताया। इस अवसर पर पूर्वोत्तर के राज्यों के भाजपा के सभी मुख्यमंत्री, सभी प्रदेश अध्यक्ष और संगठन से जुड़े वरिष्ठ पदाधिकारीगण सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यालय का उद्घाटन के पश्चात् श्री नड्डा ने आईटीए सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया और उनसे इस कार्यालय का सदुपयोग करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिश्व शर्मा, मणिपुर के मुख्यमंत्री श्री एन. बीरेन सिंह, अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक साहा, पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं असम के भाजपा प्रभारी श्री बैजयंत जय पांडा, पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री एम चुबा आओ, मणिपुर के प्रभारी एवं पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. संबित पात्रा, पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री दिलीप सैकिया, त्रिपुरा के प्रभारी श्री विनोद सोनकर और क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री अजय जामवाल सहित सभी प्रदेश अध्यक्ष भी उपस्थित थे।

भाजपा के नवनिर्मित कार्यालय 'पद्म भवन' की चर्चा करते हुए श्री नड्डा ने कहा कि 'पद्म भवन' सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त है जिसमें कार्यकर्ताओं की सुविधा की हर बात का ध्यान रखा गया है। कभी किराए के मकान में, दो कमरे के मकान में हमारा कार्यालय चलता था लेकिन आज न केवल हर जिले में कार्यालय बन रहा है, बल्कि आज पूर्वोत्तर के कार्यालय का भी उद्घाटन हुआ है। यह समय के साथ भाजपा की बदलती हुई तस्वीर है। असम में पांच जिला कार्यालय बन चुके हैं, 18 जिलों में बिल्डिंग का निर्माण कार्य लगभग पूरा होने वाला है और चार अन्य जिला कार्यालय पर काम चल रहा है। हमारे लिए कार्यालय ऑफिस नहीं बल्कि कार्यकर्ताओं के लिए संस्कार का केंद्र होता है। कार्यालय रूपी हार्डवेयर से कार्यकर्ताओं के ताकत रूपी सॉफ्टवेयर का उपयोग होना चाहिए। हमारे कार्यकर्ताओं ने निःस्वार्थ भाव से अपना पूरा जीवन पार्टी के उत्थान में अर्पित कर दिया। कुर्सी हमारा लक्ष्य नहीं है बल्कि "तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें न रहें" – इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम सभी भाजपा के कार्यकर्ता कटिबद्ध भाव से समर्पित रहते हैं।

भाजपा प्रदेश प्रभारियों एवं सह प्रभारियों की नियुक्ति

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 9 सितंबर, 2022 को विभिन्न राज्यों के प्रभारियों एवं सह-प्रभारियों की नियुक्त की। सूची निम्नलिखित है:

प्रदेश	प्रभारी	सह-प्रभारी
बिहार	श्री विनोद तावड़े	श्री हरीश द्विवेदी, सांसद
छत्तीसगढ़	श्री ओम माथुर	श्री नितिन नबीन, विधायक
दादरा और नगर हवेली एवं दमन और दीव	श्री विनोद सोनकर, सांसद	
हरियाणा	श्री बिप्लब कुमार देब	
झारखंड	श्री लक्ष्मीकांत बाजपेयी, सांसद	
केरल	श्री प्रकाश जावडेकर, सांसद	डॉ. राधामोहन अग्रवाल, सांसद
लक्षद्वीप	डॉ. राधामोहन अग्रवाल, सांसद	
मध्य प्रदेश	श्री पी. मुरलीधर राव	श्रीमती पंकजा मुंडे एवं डॉ. रमाशंकर कठेरिया, सांसद
पंजाब	श्री विजय भाई रूपानी, विधायक	डॉ. नरिंदर सिंह रैना
तेलंगाना	श्री तरूण चुघ	श्री अरविन्द मेनन
चंडीगढ़	श्री विजय भाई रूपानी, विधायक	
राजस्थान	श्री अरूण सिंह, सांसद	श्रीमती विजया राहटकर
त्रिपुरा	डॉ. महेश शर्मा, सांसद	
पश्चिम बंगाल	श्री मंगल पाण्डेय, एमएलसी	श्री अमित मालवीय, सुश्री आशा लकड़ा
नार्थ ईस्ट प्रदेश	डॉ. संबित पात्रा, संयोजक	श्री रितुराज सिन्हा, सह-संयोजक

अनुसूचित समाज कांफ्रेंस, तिरुअनंतपुरम (केरल)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और गरीबों का सशक्तीकरण किया : अमित शाह

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री अमित शाह ने 3 सितंबर, 2022 को तिरुअनंतपुरम, केरल में आयोजित अनुसूचित समाज कांफ्रेंस को संबोधित किया। कार्यक्रम में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री के. सुरेन्द्रन, केरल के भाजपा प्रभारी श्री सीपी राधाकृष्णन, पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री एपी अब्दुल्ला कुट्टी, श्री पीके कृष्णराज, श्री कुम्भनम राजशेखरन, सुश्री सीके जानू और पद्मश्री एमके कुंजोल सहित बड़ी संख्या में अनुसूचित समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

केरल में राजनीतिक भविष्य केवल भाजपा में

कांग्रेस और वामपंथियों पर पर जोरदार हमला बोलते हुए श्री शाह ने कहा कि पूरे देश के जनमानस से कांग्रेस धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है और पूरी दुनिया से वामपंथी विचारधारा भी लुप्त होने के कगार पर है। केरल में राजनीतिक भविष्य है तो केवल और केवल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी में ही है।

उन्होंने कहा कि मैं आज कांग्रेस पार्टी से पूछना चाहता हूं कि क्या कभी आपकी सरकार के मंत्रिपरिषद् में 12 मंत्री अनुसूचित समाज से रहे हैं? यह कार्य हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया है।

जनजाति समाज को आगे बढ़ाए बगैर भारत का विकास असंभव

श्री शाह ने कहा कि जब पहली बार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार को देश का राष्ट्रपति चुनने का अवसर मिला, तो हमने दलित समाज के गरीब बेटे श्री रामनाथ कोविंदजी को देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर सुशोभित किया और दूसरी बार जब हमें यह अवसर मिला तो हमने आदिवासी समाज के अत्यंत गरीब घर में जन्म लेकर अपने पुरुषार्थ से समाज में एक नई लकीर खींचने वाली बेटी आदरणीया श्रीमती द्रौपदी मुर्मूजी को राष्ट्रपति के पद पर प्रतिष्ठित किया, क्योंकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का यह दृढ़ विश्वास है कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के भाइयों एवं बहनों को आगे बढ़ाए बगैर भारत का विकास असंभव है।

उन्होंने कहा कि देश में लगभग 60 वर्षों तक कांग्रेस की सरकार रही। वामपंथी पार्टियां भी लगभग 8 सालों तक सत्ता में भागीदार रही, लेकिन इन्होंने दलित, आदिवासी और गरीबों के कल्याण के लिए कोई कदम नहीं उठाये। इन्होंने केवल उनके वोट हड़पे। ये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हैं जिन्होंने दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और गरीबों का सशक्तीकरण किया।

उन्होंने कहा कि मुद्रा योजना में लगभग 10 करोड़ लोगों को ऋण देकर उनका सशक्तीकरण किया गया, उसमें से लगभग 50 प्रतिशत ऋण दलित समाज के लोगों को दिया गया। इसी तरह उज्ज्वला योजना के तहत श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने 9 करोड़ परिवारों को गैस का कनेक्शन दिया, इसमें से लगभग 5 करोड़ गैस कनेक्शन दलित और आदिवासी समाज की महिलाओं को दिया गया। स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश भर में पिछले 8 वर्षों में लगभग 11 करोड़ शौचालय बनाए गए, इसमें से लगभग 5.50 करोड़ शौचालय एससी और एसटी समाज के लोगों के लिए बनाए गए। नल से जल योजना के तहत जिन 8 करोड़ घरों में पानी पहुंचाया गया है, उसमें से लगभग तीन करोड़ कनेक्शन गरीब, दलित और आदिवासियों घरों में दिए गए हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से भी सबसे अधिक लाभान्वित दलित, आदिवासी और गरीब किसान ही हुए हैं। विगत दो वर्षों से देश के लगभग 80 करोड़ लोगों तक हर महीने जरूरी अनाज मुफ्त दिए जा रहे हैं। इससे भी सबसे अधिक लाभ अनुसूचित समाज के लोगों को हुआ है।

पंच तीर्थ के रूप में विकास

श्री शाह ने कहा कि जब तक देश में कांग्रेस का शासन रहा, बाबासाहब भीमराव अंबेडकर जी को भारत रत्न नहीं दिया गया। जब केंद्र से कांग्रेस सरकार की विदाई हुई, तब उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 14 अप्रैल को राष्ट्रीय समरसता दिवस घोषित करके सदा के लिए बाबासाहब को सम्मान देने का कार्य किया। इसी तरह, प्रधानमंत्रीजी ने 26 नवंबर को 'संविधान दिवस' घोषित करके संविधान के निर्माण में बाबासाहब के योगदान को देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अलंकृत करने का कार्य किया है। इसके साथ ही, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बाबासाहब से जुड़े पांच महत्वपूर्ण स्थलों जन्मभूमि मऊ, शिक्षा भूमि लंदन, दीक्षा भूमि नागपुर, चैत्य भूमि मुंबई और महापरिनिर्वाण स्थल, अलीपुर को पंच तीर्थ के रूप विकसित करने का कार्य किया है। नयी दिल्ली में बाबासाहब के सम्मान में अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर तैयार किया जा रहा है। परिनिर्वाण स्थल, अलीपुर को स्टेट ऑफ द आर्ट म्यूजियम और बाबासाहब के मेमोरियल के रूप में कन्वर्ट किया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन पर विशेष

मोदी स्टोरी

राष्ट्र एक सामाजिक रचना है, भौतिक रचना नहीं: मोदी

अवधूत सुमंत
अधिवक्ता, वडोदरा

अधिवक्ता श्री अवधूत सुमंत 80 के दशक के दौरान वडोदरा में आरएसएस के एक बौद्धिक वर्ग में श्री नरेन्द्र मोदी के साथ अपनी बातचीत को याद करते हैं। इस बैठक की अध्यक्षता तत्कालीन आरएसएस सरसंघचालक श्री के.सी. सुदर्शन जी कर रहे थे और श्री मोदी भी वहां मौजूद थे।

बौद्धिक वर्ग पूर्ण होने के बाद चर्चा के लिए सभी को आमंत्रित किया गया और सभी को सुदर्शन जी से सीधे प्रश्न पूछने की अनुमति दी गई। इस दौरान श्री अवधूत सुमंत ने भी एक प्रश्न किया। उन्होंने पूछा, 'राष्ट्र राज्य से अलग है। राज्य की अवधारणा बदल सकती है लेकिन राष्ट्र की धारणा अनूठी और अपरिवर्तनीय है। राष्ट्र अदृश्य और शाश्वत है, कृपया उदाहरण सहित समझाएं।'

इस प्रश्न पर श्री के.सी. सुदर्शन जी ने युवा श्री नरेन्द्र मोदी से जवाब देने का अनुरोध किया।

अपने जवाब में श्री नरेन्द्र मोदी ने जोर देकर कहा कि राष्ट्र एक मानव शरीर की तरह है।

श्री मोदी ने आगे एक उदाहरण के साथ अवधारणा को समझाया। उन्होंने श्री अवधूत से पूछा, 'अगर मैं आपको यहां थप्पड़ मारूं तो आप कैसे प्रतिक्रिया करेंगे?'

श्री अवधूत ने उत्तर दिया, 'अगर मैं ऐसा करने के लिए पर्याप्त मजबूत हूं तो मैं आपको थप्पड़ मारूंगा। नहीं तो मैं भाग जाऊंगा।'

इसके बाद श्री मोदी ने आगे कहा, मेरे थप्पड़ मारने से आपके गाल में दर्द होता है, जिसकी प्रतिक्रिया आपके पैर या हाथ से मिलती है। श्री मोदी का इससे मतलब यह था कि शरीर के एक हिस्से में जो समस्याएं दिखाई देती हैं, उसे शरीर के दूसरे हिस्सों द्वारा संवेदनशीलता से महसूस किया जाता है। यदि शरीर में एक–दूसरे के बीच एकजुटता का अभाव है, तो चिकित्सा की दृष्टि से इसे पक्षाघात के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसी तरह, यदि किसी नागरिक को असम, जम्मू और कश्मीर में प्रताड़ित किया जाता है या दबाया जाता है और अगर यह दूसरे नागरिक को उसकी पीड़ा का एहसास नहीं कराता है, तो इसका मतलब है कि राष्ट्र की चेतना खतरे में है। राष्ट्र एक सामाजिक रचना है, न कि भौतिक रचना। जैसाकि पेड़ की एक ही जड़ होती है लेकिन उसकी शाखाएं, पत्ते, फूल और फल अलग–अलग होते हैं। एक साथ रहने वाले लोगों को जोड़ना, उन्हें एक विचारधारा से आत्मसात् करना, वह है राष्ट्र।

प्रधानमंत्री मोदी भारतीय खेलों को प्रोत्साहित करने में अग्रणी

मोदी स्टोरी

'फिट इंडिया' से लेकर 'खेलो इंडिया' और टॉप्स योजना तक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भारतीय खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए अग्रणी रहे हैं। लेकिन इससे भी अधिक श्री मोदी खिलाड़ियों की सफलता का जश्न मनाना पसंद करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि भारत का नाम रोशन करने के बाद वे सम्मानित महसूस करें। साथ ही, वह अगले खेल आयोजन के लिए नए मानक स्थापित करने के लिए भी जाने जाते हैं।

भारत के लिए पहली महिला पैरालंपिक पदक विजेता सुश्री दीपा मलिक ने खेल आयोजन से लौटने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ अपनी मुलाकात को याद किया।

भारत के रियो ओलंपिक पदक विजेताओं के सम्मान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक अभिवादन कार्यक्रम आयोजित किया था। आमंत्रित खिलाड़ियों की सूची में सुश्री दीपा मलिक का नाम भी था, जिन्होंने अपने 10 वर्षों के करियर में पहली बार देश के लिए पदक जीता था।

ग्रीटिंग–एंड–मीट कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पैरालिंपियन को उनके नाम से बुलाया और कहा, 'सुश्री दीपा, आपके पास एक सकारात्मक वाइब है और आप हमेशा सकारात्मक तरीके से बोलते हैं। कई बार, मैं आपके वीडियो देखता हूं और सकारात्मक महसूस करता हूं।'

प्रधानमंत्री श्री मोदी के साथ एक और मुलाकात राष्ट्रपति भवन में आयोजित स्वागत समारोह में हुई। जब प्रधानमंत्री श्री मोदी ओलंपियनों से हाथ मिला रहे थे। कुछ लोगों ने सुश्री दीपा मलिक की व्हीलचेयर के पीछे से प्रधानमंत्री श्री मोदी से हाथ मिलाने की कोशिश की। लेकिन उन्हें आश्चर्यचकित करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने खुद आगे आकर सुश्री दीपा को भीड़ के धक्का से बचाया, उन सभी से पीछे रहने की अपील की, क्योंकि इससे सुश्री दीपा मलिक को चोट लग सकती थी। यहां दो बातें ध्यान देने योग्य है, पहला, प्रधानमंत्री श्री मोदी ने उनकी सुरक्षा का ध्यान रखा और दूसरा, उन्हें याद रहा कि सुश्री दीपा मलिक की कुछ सप्ताह पहले रीढ़ की हड्डी की सर्जरी हुई थी। प्रधानमंत्री के इस व्यवहार ने दीपा मलिक में एक विशिष्ट का भाव पैदा किया और अगली बार देश के लिए बेहतर करने के लिए उन्हें प्रेरित भी किया।

एक और अवसर जब प्रधानमंत्री श्री मोदी का खिलाड़ियों में दृढ़ विश्वास देखने को मिला, यह अवसर अहमदाबाद में सामने आया।

सुश्री दीपा मलिक को प्रधानमंत्री कार्यालय से एक फोन आया। उन्हें प्रधानमंत्री श्री मोदी के निमंत्रण पर अहमदाबाद पहुंचने के लिए आमंत्रित किया गया था, लेकिन समय बेहद कम था। जब वह अहमदाबाद पहुंचीं, तो सुश्री दीपा मलिक को पता चला कि उन्हें एक ट्रांसस्टेडिया के उद्घाटन में आमंत्रित किया गया था, जहां क्रिकेटर, ओलंपियन और अन्य खेलों के खिलाड़ी भी मौजूद थे। जब प्रधानमंत्री श्री मोदी वहां सुश्री दीपा से मिले, तो उन्होंने कहा कि एक महिला और विशेष रूप से सक्षम खिलाड़ी के बिना यह लाइन–अप अधूरा था।

साथ ही, प्रधानमंत्री श्री मोदी ने उद्घाटन के लिए खुद सुश्री दीपा मलिक की व्हीलचेयर को मंच तक पहुंचाया। यह पैरालिंपियन के लिए एक मार्मिक क्षण साबित हुआ और उसके पास अभी भी उसी घटना की ट्विटर प्रोफाइल तस्वीर है। कार्यक्रम में अपने भाषण के दौरान प्रधानमंत्री श्री मोदी ने यह भी कहा कि सुश्री दीपा मलिक की जीवनी एक खिलाड़ी को देश के लिए बेहतर करने के लिए प्रेरित कर सकती है।

सुश्री दीपा मलिक ने इस क्षण को जिम्मेदारी की एक अतिरिक्त भावना जोड़ने के रूप में वर्णित किया है। वह यह भी कहती हैं कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के ये शब्द उन्हें और अधिक जिम्मेदार होने और भारत के लिए बेहतर करने के लिए प्रेरित करते हैं।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने 'अमृतकाल का संकल्प' पुस्तिका का किया विमोचन

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 07 सितंबर, 2022 को नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक पर केन्द्रित पुस्तिका 'अमृतकाल का संकल्प' का विमोचन किया। इस अवसर पर डॉ. शिव शक्ति नाथ बक्सी ने श्री नड्डा को 'कमल संदेश' की एक प्रति भी भेंट की।

'अमृतकाल का संकल्प' पुस्तिका में अध्यक्षीय उद्‌बोधन, माननीय प्रधानमंत्री का उद्‌बोधन, दोनों प्रस्तावों का पूरा पाठ और इन प्रस्तावों के प्रस्तावकों एवं अनुमोदकों के भाषण शामिल हैं। इसके अलावा, तेलंगाना राज्य पर भाजपा द्वारा जारी बयान और बैठक की कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण भी प्रकाशित किया गया है। यह निश्चित रूप से हमारे सुधी पाठकों के लिए एक उपयोगी पुस्तिका है।

पंडित जी सिद्धांत आधारित राजनीति और निःस्वार्थ सेवा के लिए जाने जाते हैं

कमल पुष्प

पंडित देवेंद्र शास्त्री
जन्म तिथि: 20 मई 1921
सक्रिय वर्ष: 1951 - 2012
बिजनौर, उत्तर प्रदेश और देहरादून, उत्तराखंड
निस्वार्थ सेवा की कहानी

सेवा, समर्पण, त्याग, संघर्ष एवं बलिदान

पंडित देवेंद्र शास्त्री जी ने 1936 में अपनी युवावस्था में एक स्वतंत्रता सेनानी रहते हुए अन्याय और तुष्टीकरण के खिलाफ आवाज उठाई और वह आजीवन इन सिद्धांतों पर कायम रहे। 1947 में भी उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए कि शेखपुरा, लायलपुर, पाकिस्तानी पंजाब के हिस्से से हिंदुओं को सुरक्षित निकाला जाए, अपने जीवन को जोखिम में डाला। जनसंघ के स्थापना काल से ही वह विभिन्न जनांदोलन में भाग लेते रहे, जिससे उन्हें अपार लोकप्रियता हासिल हुई। श्रमदान देते हुए उन्होंने हरिद्वार के भगवानपुर गांव में एक सिंचाई नहर का निर्माण करवाया, जिसका उद्‌घाटन बाद में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने किया। 1953 के 'कश्मीर बचाओ आंदोलन' में भाग लेने के कारण शास्त्री जी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें तीन महीने बिजनौर, उत्तर प्रदेश और दिल्ली की जेलों में बिताने पड़े। 1951 और 1977 के बीच शास्त्री जी ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के संगठन मंत्री के रूप में भी कार्य किया। 1977 में आपातकाल के बाद वे देहरादून से विधान सभा के सदस्य के रूप में चुने गए। साथ ही, उन्हें उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी का उपाध्यक्ष और उत्तरांचल प्रदेश संघर्ष समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। बाद में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य भी बने, जबकि पहले जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी के आजीवन सदस्य बने रहे। आम लोगों के मुद्दों को उठाने के साथ–साथ विभिन्न स्थानों पर अलग उत्तरांचल राज्य के अभियान का नेतृत्व करने के लिए उन्हें लगभग तीन साल तक जेल में भी रखा गया था। पंडित देवेंद्र शास्त्री जीवन भर सिद्धांत आधारित राजनीति, निःस्वार्थ सेवा और राष्ट्रवाद के लिए जाने जाते रहे।

अमृत काल संकल्प रैली, कैथल (हरियाणा)

'कमल खिलाने से क्या-क्या बदलाव आते हैं, यह हरियाणा सरकार ने कर दिखाया है'

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा 2 एवं 3 सितंबर, 2022 को हरियाणा प्रवास पर रहे, जहां उन्होंने कई सार्वजनिक एवं संगठनात्मक बैठकों में भाग लिया व पार्टी के कार्यक्रमों की समीक्षा की

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 2 सितंबर, 2022 को न्यू अनाज मंडी मैदान, कैथल (कुरुक्षेत्र लोक सभा) में आयोजित विशाल 'अमृत काल संकल्प रैली' को संबोधित किया और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही हरियाणा की डबल इंजनवाली भाजपा सरकार की विकास योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की।

जनसभा में श्री नड्डा के साथ–साथ प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश धनखड़, प्रदेश भाजपा प्रभारी श्री विनोद तावड़े सहित कई वरिष्ठ नेता, सांसद, विधायक एवं प्रदेश सरकार के कई मंत्रीगण उपस्थित थे।

रैली को संबोधित करते हुए श्री नड्डा ने कहा कि सही समय पर सही बटन दबाकर कमल खिलाने से क्या–क्या बदलाव आते हैं, यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और उनके नेतृत्व में चलनेवाली हमारी हरियाणा सरकार ने कर के दिखाया है। आज हरियाणा में कोई सड़क सिंगल लेन रह नहीं गई है। हरियाणा के खिलाड़ी परचम लहरा रहे हैं

खेल के क्षेत्र में हरियाणा के अमूल्य योगदान को रेखांकित करते हुए श्री नड्डा ने कहा कि ओलंपिक का मतलब हरियाणा, पैरालंपिक का मतलब हरियाणा, एशियाड का मतलब हरियाणा और कॉमनवेल्थ गेम्स का मतलब हरियाणा। आज हरियाणा के खिलाड़ी खेल के हर वैश्विक स्पर्धा में भारत का परचम लहरा रहे हैं। टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक में हमने अब तक का सबसे शानदार प्रदर्शन किया। इसी तरह कॉमनवेल्थ गेम्स में कई खेलों के नहीं रहने के बावजूद 22 गोल्ड मैडल प्राप्त किये और 61 पदकों के साथ हम पांचवें स्थान पर रहे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जिस तरह श्री मनोहर लाल खट्टर सरकार खेल के क्षेत्र में कार्य कर रही है और यहां के खेल मंत्री श्री संदीप सिंह जिस तरह से खेलो इंडिया को गति दे रहे हैं, विभिन्न खेलों को प्रोत्साहित कर रहे हैं, इसका देश के अन्य राज्यों के खेल मंत्री भी अनुसरण कर रहे हैं।

हरियाणा में विकास

हरियाणा में विकास की कहानी को उद्धृत करते हुए श्री नड्डा ने कहा कि 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' के तहत हरियाणा के लगभग 19 लाख लोग लाभान्वित हो रहे हैं। किसान मान धन योजना के तहत राज्य में लगभग 68 हजार किसानों ने रजिस्टर किया है। हरियाणा के लगभग 90 प्रतिशत किसानों को स्वायल हेल्थ कार्ड मिल चुका है। इस मामले में हरियाणा पूरे देश में पहले स्थान पर है। फसल बीमा योजना के तहत प्रदेश में किसानों के लगभग 4,700 करोड़ रुपये के क्लेम का भुगतान किया जा चुका है। प्रदेश के लगभग 16 लाख परिवार 'आयुष्मान भारत योजना' से लाभान्वित हो रहे हैं। हरियाणा में शत–प्रतिशत विद्युतीकरण का कार्य पूरा हो चुका है।

श्री नड्डा ने कहा कि कैथल में लगभग 997 करोड़ रुपये की लागत से मेडिकल कॉलेज खोला गया है। भिवानी में भी मेडिकल कॉलेज की मंजूरी दी गई है। रेवाड़ी के मनेठी में एम्स का निर्माण होने वाला है। नेशनल हाइवे पर हरियाणा में लगभग 30,000 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे हैं। देश भर में 267 स्पोर्ट्स सेंटर खोले जा रहे हैं जिसमें से 8 स्पोर्ट्स सेंटर हरियाणा में खुले हैं। एफडीआई में हरियाणा में लगभग 36,000 करोड़ रुपये का निवेश हो रहा है। झज्जर में नेशनल कैंसर सेंटर बना है। अंबाला में भी लगभग 100 करोड़ रुपये की लागत से कैंसर सेंटर बना है। पलवल से सोहना–मानेसर–खरखौदा होते हुए सोनीपत तक हरियाणा ऑर्बिटल रेल कॉरिडोर परियोजना को मंजूरी दी गई है। इस पर लगभग 5600 करोड़ रुपये खर्च होने हैं।

उन्होंने कहा कि 2014 में हरियाणा में लगभग 8700 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता था, आज लगभग 12,500 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। 2014 में हरियाणा में 2050 किमी लंबा हाइवे था, आज यह बढ़कर 3250 किमी हो गया है। लगभग 5,000 नए स्टार्ट–अप अकेले हरियाणा में खुले हैं। कैथल में 20 एकड़ में सब्जी मंडी बन रही है। कैथल–पटियाला रोड का निर्माण हो रहा है और कैथल में रिसर्च सेंटर भी खोले गए हैं।

उपलब्धियों को घर–घर तक पहुंचाइये

श्री नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन वाली भाजपा की मनोहर लाल खट्टर सरकार के अच्छे कार्यों को समर्थन दीजिये और डबल इंजनवाली सरकार की।

सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए भारत में स्वदेशी रूप से विकसित हुआ 'सर्वविक' टीका

सर्वाइकल कैंसर भारत में दूसरा सबसे अधिक होने वाला कैंसर है और यह बड़े पैमाने पर रोकथाम योग्य होने के बावजूद विश्व में सर्वाइकल कैंसर से होने वाली मौतों का लगभग एक-चौथाई हिस्सा है

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र विज्ञान), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने एक सितंबर को सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए भारत के पहले स्वदेशी रूप से विकसित टीका 'सर्वावैक' की घोषणा की।

केंद्रीय मंत्री ने प्रमुख वैज्ञानिकों व गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में क्वाड्रिवेलेंट ह्यूमन पैपिलोमा वायरस (क्यूएचपीवी) टीके के वैज्ञानिक समापन की घोषणा की। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि यह अवसर डीबीटी (जैव प्रौद्योगिकी विभाग) और बीआईआरएसी (जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद्) के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि इस सस्ते और लागत प्रभावी टीके का निर्माण भारत को प्रधानमंत्री मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' की सोच के नजदीक ले जाता है।

गौरतलब है कि सर्वाइकल कैंसर भारत में दूसरा सबसे अधिक होने वाला कैंसर है और बड़े पैमाने पर रोकथाम के योग्य होने के बावजूद यह विश्व में सर्वाइकल कैंसर से होने वाली मौतों का लगभग एक–चौथाई हिस्सा है। हर साल लगभग 1.25 लाख महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर पाया जाता है और इस रोग से भारत में 75 हजार से अधिक मृत्यु हो जाती है। भारत में 83 फीसदी और पूरे विश्व में 70 फीसदी मामलों के लिए इनवेसिव (हमलावर) सर्वाइकल कैंसर एचपीवी 16 या 18 जिम्मेदार है।

दरअसल, सर्वाइकल कैंसर को रोकने के लिए सबसे अधिक उम्मीद जगाने वाली पहल ह्यूमन पेपिलोमावायरस (एचपीवी) के खिलाफ टीकाकरण है। यह अनुमान लगाया गया है कि पूरे विश्व में एचपीवी 16 और 18 का सभी इनवेसिव सर्वाइकल कैंसर के मामलों में लगभग 70 फीसदी का योगदान है।

क्विक रियक्शन सर्फेस टू एयर मिसाइल प्रणाली की छह उड़ानों का सफल परीक्षण

क्यूआरएसएएम शस्त्र प्रणाली का नयापन यह है कि वह चलित स्थिति में भी काम कर सकती है। इसमें थोड़ी सी देर रुककर तलाश, ट्रैकिंग और गोला-बारी करने की क्षमता है

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय सेना ने आठ सितंबर को ओडीशा तट के निकट एकीकृत परीक्षण क्षेत्र, चांदीपुर से क्विक रियक्शन सर्फेस टू एयर मिसाइल प्रणाली की छह उड़ानों का सफल परीक्षण किया। ये उड़ान परीक्षण भारतीय सेना द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन परीक्षण का हिस्सा हैं।

उड़ान परीक्षण उच्च गति वाले लक्ष्यों पर किया गया था। ये लक्ष्य वास्तविक खतरे के प्रकार के बनाये गये थे, ताकि विभिन्न हालात में हथियार प्रणालियों की क्षमता का आकलन किया जा सके। इसमें लंबी दूरी व मध्यम ऊंचाई वाले लक्ष्य, छोटी रेंज वाले लक्ष्य, ऊंचाई पर उड़ने वाले लक्ष्य, राडार पर आसानी से पकड़ में न आने वाले लक्ष्य शामिल थे। इन सबको ध्यान में रखते हुए तेजी के साथ दो मिसाइल दागे गये।

प्रणाली के काम करने का मूल्यांकन रात व दिन की परिस्थितियों में भी किया गया।

इन परीक्षणों के दौरान सभी निर्धारित लक्ष्यों को पूरी सटीकता के साथ भेदा गया। मूल्यांकन में हथियार प्रणाली और उसका उत्कृष्ट दिशा–निर्देश और नियंत्रण सटीक पाया गया। इसमें युद्धक सामग्री भी शामिल थी। प्रणाली के प्रदर्शन की पुष्टि आईटीआर द्वारा विकसित टेलीमेट्री, राडार और इलेक्ट्रो ऑप्टिकल ट्रैकिंग प्रणाली से भी की गई।

ये परीक्षण स्वदेश में विकसित समस्त उप–प्रणालियों की तैनाती के तहत किया गया, जिसमें स्वदेशी रेडियो फ्रीक्वेंसी सीकर, मोबाइल लॉन्चर, पूरी तरह स्वचालित कमान और नियंत्रण प्रणाली, निगरानी और बहुपयोगी राडार शामिल है। क्यूआरएसएएम शस्त्र प्रणाली का नयापन यह है कि वह चलित स्थिति में भी काम कर सकती है। इसमें थोड़ी सी देर रुककर तलाश, ट्रैकिंग और गोला–बारी करने की क्षमता है। पूर्व में इसका परीक्षण किया जा चुका है।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने सफल उड़ान परीक्षणों के लिये डीआरडीओ और भारतीय सेना को बधाई दी। उन्होंने भरोसा जताया कि क्यूआरएसएएम शस्त्र प्रणाली सशस्त्र बलों की शक्ति बढ़ाने में बहुत उपयोगी होगी।

वैचारिकी

जीवन का सुख

व्यक्ति समाज से लेता है, हर समय समाज पर अवलंबित रहता है। इसलिए समाज का सुख, यही व्यक्तिगत सुख होना चाहिए। चार लोग सहायता करते हैं, इससे आदमी आगे चलता है, सुखी बनता है। उसकी भाषा, ज्ञान और कर्मशक्ति समाज पर निर्भर रहती है। केवल हाथ–पैर हिलाना, कर्म नहीं, खेती करना किसने सिखाया? इंजीनियर, कलाकार कहां से बना? तंत्रज्ञान दूसरों से प्राप्त होता है।

समाज मनुष्य को कर्मयोगी बनाता है। समाज नहीं सिखाएगा तो आदमी हाथ–पैर से कर्म नहीं कर सकता। कर्म समाज के द्वारा सिखाए जाते हैं। समाज के लिए जो उपयोगी नहीं, वह कर्म नहीं। केवल उठना, बैठना कर्म नहीं। पागल भी चक्कर लगाता रहता है। वह कर्मयोगी नहीं, क्योंकि उसका कर्म समाज के लिए उपयोगी नहीं। सभी प्रकार का ज्ञान हमें समाज से होता है। मनुष्य को समाज से हटा दिया तो उसे ज्ञान नहीं रहेगा। गुरु, अध्यापन और लोक–संस्कार इनसे हमें अच्छे–बुरे का ज्ञान अलग होगा। हम किसी को उल्लू कहते हैं, तो उसे बुरा लगता है। परंतु अंग्रेजी में 'एज वाइज एन आउल' ऐसा शब्द प्रयोग करते हैं। हम मूर्ख को गधा कहते हैं। परंतु गधा समझदार प्राणी माना जाता है। जो उल्लू को विद्वान् समझता है, उनकी बुद्धि का स्तर क्या होगा, इसके बारे में आप ही कल्पना कर सकते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

समाज हमें स्वाभाविकता से मिला है। इसलिए हमारे ख़याल में नहीं आता। हमें समाज का विस्मरण हो जाता है। यह विस्मरण बढ़ जाएगा, तो हम समाज से दूर हटते जाएंगे। हम समाज से लेते हैं, तो वापस भी देना चाहिए

समाज ही हमारे विधि निषेध का निर्णय करता है। जब दो लोग मिलते हैं तो हाथ जोड़ते हैं। क्यों? एक हाथ से नमस्कार को बुरा मानते हैं और दो हाथ जोड़कर नमस्कार करने को सम्मान मानते हैं। अफ्रीका में दो आदमी मिले तो परस्पर नाक रगड़ते हैं। हाथ मिलाने की प्रथा पाश्चात्य देशों में है। मैंने एक लेख पढ़ा था। उसमें लिखा था कि ठंडे देश में हाथ मिलाने में आनंद होता है, क्योंकि उससे उष्णता निर्माण होती है। यहां तो गरमी रहती हैं। हाथ को पसीना रहता है, इसलिए हाथ जोड़ना ही अच्छा। तो हमें सब कुछ समाज से प्राप्त होता है। क्या खाना, कैसे खाना इसको समाज देता है। भक्ति भावनाओं का प्रकटीकरण भी समाज हमें सिखाता है। यहां कीर्तन होगा तो बहुत लोग जम जाएंगे। उसमें आनंद मनाएंगे। इंग्लैंड में 'बॉल डांस' प्रचलित है, यहां नहीं। हृदय की तीव्रतम तरंगें जीवन को आंदोलित कर देती हैं। हमारे शरीर को जो आकार मिला है, वह स्वाभाविक नहीं। बंगाल में लोगों के सिर का जो विशिष्ट आकार रहता है, वह दाई देती है। बच्चा पैदा होते ही उसे आकर दिया जाता है। तो इस प्रकार हमारा मन, शरीर, बुद्धि, भक्ति–यह सब समाज से मिलता है। समाज को हटा दिया तो बाक़ी जीवन रहेगा ही नहीं। परंतु जो अत्यंत सहज सामान्य चीज होगी, उसको आदमी भूल जाता है। 'जिंदगी के लिए क्या जरूरी है' ऐसा पूछा जाए तो लोग कहेंगे कि 'रोटी'। परंतु रोटी से पानी अधिक महत्त्व का है। प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी और पुरी के शंकराचार्यजी ने केवल गंगाजल लेकर उपवास किया। पानी न मिला तो एक–दो दिन गुजार सकते हैं, परंतु हवा न मिली तो कुछ मिनटों में खत्म हो जाएंगे। लोग कहते हैं कि पेट पापी है, परंतु सचमुच विचार किया तो सांस पापी है। पेट के लिए सब कुछ करना पड़ता है, पानी के लिए प्रयत्न कम और हवा तो सहज मिल जाती है। जो वस्तु सहज मिलती है, वह आवश्यक होने पर भी दुर्लक्ष्य किया जाता है। हवा की तक़लीफ़ शहरों में रहती है। फैक्टरी में या हिमालय पर सांस मुश्किल हो जाती है। बड़े नगरों में हवा शुद्ध रखने के लिए बड़े प्रयत्न किए जाते हैं।

उसी प्रकार समाज हमें स्वाभाविकता से मिला है। इसलिए हमारे ख़याल में नहीं आता। हमें समाज का विस्मरण हो जाता है। यह विस्मरण बढ़ जाएगा, तो हम समाज से दूर हटते जाएंगे। हम समाज से लेते हैं, तो वापस भी देना चाहिए। हम बैंक के एकाउंट से पैसे निकालते चलें, तो थोड़े ही दिनों में एकाउंट ख़त्म हो जाएगा। इसलिए लेन–देन दोनों चाहिए। हम समाज से लेते रहते हैं और समाज ने न दिया तो गाली देते हैं।

मां हमें रोटी देती है, बाजार से साग लाकर देना हमारा काम है। हम खेत से धान्य लेते हैं और खेत में खाद न डालें तो खेत की शक्ति खत्म हो जाएगी। भगवान् की कृपा से हमारे समाज का सामर्थ्य इतना है कि हम इतने दिन लेते आए, तो भी समाज दे रहा है। अनेक काम स्वाभाविक रीति से होते हैं, व्यवसाय चला आ रहा है। विवाह के समय पुरोहित की आवश्यकता होती है। पुरोहित तैयार किया जाए, इसकी चिंता कोई नहीं करता। त्रिनिडाड के कुछ लोग हिंदुस्तान आए थे। नब्बे सौ वर्ष के पूर्व वे उत्तर प्रदेश, बिहार, मद्रास से वहां गए। वहां के खेत में मजदूरी करते हैं तो अपने लड़कों के विवाह कैसे करना, यह उनके सामने प्रश्न है। रामायण की चार चौपाइयां कहकर विवाह करते हैं। परंतु उनको लगता है कि वेद, मंत्र, सप्तपदी, पद्धति से विवाह विधिवत् होना चाहिए। इसलिए कुछ पुरोहित, पंडित वहां जाने चाहिए तो हमारे समाज में अनेक बातें स्वाभाविक रूप से हैं, हम उनकी चिंता नहीं करते। परंतु कुछ–न–कुछ चिंता करनी पड़ती है।

अगर हमारा सुख समाज के ऊपर निर्भर है तो समाज सुखी बनाने का तरीका निकालेगा। जितने भी तरीके निकालेंगे, उतने ही हम ऊपर बढ़ते जाएंगे। स्वार्थ यानी अधर्म है और परमार्थ यानी धर्म। हम जो व्यवहार करते हैं, वह हमें कंपाउंड इंटेरेस्ट से मिल जाता है। यही धर्म का रास्ता है। इससे ही समाज तुष्ट हो जाता है और इस पर ही हमारा सुख और योगक्षेम निर्भर है

हमारा सुख समाज के ऊपर निर्भर है। इसलिए आप समाज की चिंता करोगे तो आपको सुख मिलेगा। केवल अपने ही सुख की चिंता करोगे, तो दौड़–धूप, छीना–झपटी हो जाएगी। दूसरे को हंसाने का एक खेल होता है। उसमें पहले खुद हंसना पड़ता है। दूसरे को रोता देखकर आपको भी रोना आता है। एक गांव में एक लड़की थी। वह झाड़ू लगा रही थी, तब उसके मन में विवाह का विचार आया। उसने कल्पना की कि वह ससुराल जाएगी, उसे लड़का पैदा होगा, वह बीमार पड़ेगा और देहात में डॉक्टर न होगा तो वह बच्चा मर जाएगा। इस कल्पना से वह रोने लगी। वहां उसकी मां आई। बेटी को रोता देखकर उसने सोचा कि कोई बुरी खबर आई होगी, तो वह भी रोने लगी। बाद में पड़ोसिन आई, वह मां–बेटी को रोते देखकर रोने लगी। लड़की का बाप आया वह सबको रोते देखकर रोने लगा। थोड़ी देर बाद एक रिश्तेदार आया उसने पूछा कि वे सब क्यों रो रहे हैं, तो उस लड़की के बाप ने कहा, 'ये सब रो रहे थे, इसलिए मैं रो रहा है। पड़ोसिन ने कहा कि मां–बेटी रो रही थीं. मैं तो इसलिए रो रही हूं और फिर मां ने बेटी से पूछा कि बेटी, तू क्यों रो रही थी। बेटी बोली, 'मेरा बच्चा मर गया, मैं इसलिए रो रही हूं।' मां ने पूछा, 'तेरा बच्चा कहां है?' तो उसने अपने मन की कल्पना बता दी। यदि तुम रोना नहीं चाहते तो तुम्हें दूसरों को हंसाना चाहिए। किसान अनाज अपने लिए पैदा करता है क्या? नहीं, बीज बोते समय वह कहता है, 'पशु, पक्षी, देव, किन्नर, गांववाले, राजा, बाल बच्चे – इनके लिए और मेरे लिए अन्न दे।' समाज का ढांचा हो ऐसा है। बुनकर दूसरों के लिए कपड़ा बुनता है। हम समाज से केवल लेने का विचार करेंगे तो दुःखी होंगे। देने में आनंद है, लेने में नहीं। जब हमारे घर अतिथि आता है, तब हम उसको अच्छा भोजन खिलाते हैं। वह तारीफ़ करता है तो हमें आनंद होता है। हमने बढ़िया खाया तो हमें आनंद नहीं होता। मैं एक गृहस्थ के घर गया था। उनके घर में एक ही पलंग था। उन्होंने मुझे उस पर सुला दिया। उसे उसमें ही आनंद मिला। यदि न मिलता तो वह मुझे पलंग पर क्यों सुलाता। यदि मैं पलंग पर सोने के लिए इनकार करता तो उसे दुःख होता। समाज के लिए काम करने में आनंद है। जब मानव यह भूल जाता है, तब विकृति निर्माण होती है। पेट भर गया तो और ज्यादा खाना नहीं और खाते गए तो बीमार हो जाते हैं। पेट कहता है 'बस' परंतु पेट की बात हमने नहीं सुनी तो उसे दुःख होता है। अगर हमारा सुख समाज के ऊपर निर्भर है तो समाज सुखी बनाने का तरीका निकालेगा। जितने भी तरीके निकालेंगे, उतने ही हम ऊपर बढ़ते जाएंगे। स्वार्थ यानी अधर्म है और परमार्थ यानी धर्म। हम जो व्यवहार करते हैं, वह हमें कंपाउंड इंटेरेस्ट से मिल जाता है। यही धर्म का रास्ता है। इससे ही समाज तुष्ट हो जाता है और इस पर ही हमारा सुख और योगक्षेम निर्भर है। (समाप्त)

—संघ शिक्षा वर्ग, बौद्धिक वर्गः मैसूर, मई 19, 1967

ब्रिटेन को पीछे छोड़ भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना

गत तीन सितंबर को जारी ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार मार्च, 2022 के अंत में ब्रिटेन को पीछे छोड़ भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। यह गणना आईएमएफ डेटाबेस और विनिमय दरों पर आधारित थी। उल्लेखनीय है कि उसके आगे अब सिर्फ अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी हैं।

यह दूसरी बार है जब भारत ने ब्रिटेन को पीछे छोड़ा है, जबकि 2019 में पहली बार भारत की अर्थव्यवस्था ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था से आगे हुई थी।

डॉलर एक्सचेंज रेट के हिसाब से नॉमिनल कैश टर्म्स में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार मार्च तिमाही में 854.7 अरब डॉलर रहा। इसी आधार पर ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था का आकार 814 अरब डॉलर था।

श्रद्धांजलि

ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय का निधन

ब्रिटेन में सबसे लंबे समय तक राज करने वाली महारानी एलिजाबेथ द्वितीय का आठ सितंबर को स्कॉटलैंड के बालमोरल कैसल में निधन हो गया। वह 96 वर्ष की थीं। महारानी एलिजाबेथ द्वितीय का 70 वर्षों का शासन महारानी विक्टोरिया के शासन काल से सात वर्ष अधिक था। एलिजाबेथ द्वितीय छह फरवरी, 1952 को अपने पिता किंग जॉर्ज षष्ठम की मृत्यु के बाद महारानी बनीं। अगले वर्ष वेस्टमिंस्टर एबे में उनका राज्याभिषेक हुआ।

महारानी के सम्मान में भारत सरकार ने 11 सितंबर को देश भर में एक दिन का राजकीय शोक मनाने का निर्णय किया। राजकीय शोक वाले दिन देश भर में उन सभी भवनों पर, जहां राष्ट्रीय ध्वज नियमित रूप से फहराया जाता है, राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा और उस दिन कोई आधिकारिक मनोरंजन की गतिविधि आयोजित नहीं होगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के निधन पर शोक व्यक्त किया। सिलसिलेवार ट्वीट में प्रधानमंत्री ने कहा कि महामहिम महारानी एलिजाबेथ द्वितीय को हमारे समय के एक दिग्गज के रूप में याद किया जाएगा। उन्होंने अपने राष्ट्र और लोगों को प्रेरक नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में गरिमा और शालीनता का परिचय दिया। उनके निधन से आहत हूं। इस दुःख की घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके परिवार और ब्रिटेन के लोगों के साथ हैं।

उन्होंने कहा कि 2015 और 2018 में ब्रिटेन की अपनी यात्राओं के दौरान मेरी महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के साथ यादगार भेंट हुईं। मैं उनके उत्साह पूर्ण भाव और सहृदयता को कभी नहीं भूलूंगा। एक बैठक के दौरान उन्होंने मुझे वह रूमाल दिखाया जो महात्मा गांधी ने उन्हें उनके विवाह में उपहार में दिया था। मैं उस भावपूर्ण क्षण को हमेशा संजोकर रखूंगा।

जग को हंसाने वाले "राजू" का मौन !

अपनी अभिनव कलाकार, जीवन पर्वत सभी का मनोरंजन करने वाले राजू श्रीवास्तव जी का लम्बी बीमारी के बाद दिल्ली में निधन हो गया। राजू श्रीवास्तव उत्तर प्रदेश फिल्म विकास परिषद के माध्यम से प्रदेश की परम्परागत कला की विभिन्न विधाओं के उत्थान में उनका सराहनीय योगदान रहा इनके निधन से पूरा देश कला क्षेत्र अत्यन्त दुखी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, उ0प्र0 की राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह, महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह, मंत्री मण्डल के सदस्य संगठन के वरिष्ठ नेताओं ने इसे अपूर्णीय क्षति बताया।

प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह ने कहा देश के सुप्रसिद्ध हास्य कलाकार श्री राजू श्रीवास्तव का निधन अत्यंत दुःखद है, उनका जाना कला जगत के लिए अपूरणीय क्षति है, वो एक बेहतरीन कलाकार के साथ–साथ जिंदादिल इंसान थे। शोकाकुल परिवार के प्रति मैं अपनी संवेदना व्यक्त करता हूँ।

FILE PHOTO

भारतीय जनता पार्टी
उत्तर प्रदेश

पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती

राज्य स्तरीय गौ-आधारित प्राकृतिक खेती कार्यशाला-2022
प्राकृतिक खेती विधा में उत्कृष्ट कार्यों के लिए कृषकों का सम्मान
स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए
प्राकृतिक खेती
स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए
प्राकृतिक खेती

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
सितम्बर द्वितीय अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी